हरिभूमि
भिवानी-दादरी भूमि
रोहतक, रविवार 14 जून 2026

11 जिला बैडमिंटन चैंपियनशिप के पहले दिन गर्वित...

12 पेड़ गिरने से यातायात बाधित रहा तथा बिजली...

खबर संक्षेप

योग मैराथन कल सुबह छह बजे आयोजित होगी

भिवानी। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में आमजन को योग के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से जिला प्रशासन द्वारा 15 जून को सुबह छह बजे भीम स्टेडियम में योग मैराथन आयोजित होगी। नगराधीश अनिल कुमार ने बताया कि 21 जून को मनाए जाने वाले योग दिवस के मद्देनजर विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। योग मैराथन इसी अभियान का हिस्सा है। आयुष विभाग के डॉ. संजय वैद ने बताया कि शनिवार को 70 व्यायामशालाओं में योगाभ्यास एवं प्राणायाम शिविर आयोजित किए गए।

जेब से एक लाख चोरी करने के आरोपी दबोचे

भिवानी। पुलिस के डिटेक्टिव स्टाफ लोहारू ने बस में यात्री की जेब काटकर एक लाख रुपये चोरी करने के मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। अधिकारियों के अनुसार शिकायतकर्ता अपनी पुत्री के साथ तोशाम बस अड्डे से गांव ईन्दीवाली जाने के लिए बस में सवार हुए थे। यात्रा के दौरान जब उन्होंने जेब की जांच की तो पाया कि जेब कट चुकी है और एक लाख रुपये चोरी हो गए हैं। शिकायत मिलने के बाद थाना तोशाम में संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू की गई। जांच के दौरान डिटेक्टिव स्टाफ लोहारू के उप निरीक्षक विनोद कुमार के नेतृत्व में पुलिस टीम ने न्यायालय से प्रोडक्शन वारंट प्राप्त कर दो आरोपियों को गिरफ्तार किया। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान नरेश निवासी बड़सी, जिला भिवानी तथा नरेंद्र निवासी थुराना, जिला हिसार के रूप में हुई है।

मिड-डे मील कर्मियों ने मांगों को लेकर किया प्रदर्शन

10 की बजाय 12 महीने का और ₹ 15220 वेतन देने की मांग

ये हैं मुख्य मांगें

- केंद्र और राज्य का मानदेय एक साथ समय पर भुगतान किया जाए
- साल में ड्रेस के कम से कम तीन हजार रुपये देने की मांग
- सेवानिवृत्ति की आयु 65 वर्ष करने और सेवानिवृत्ति पर 5 लाख रुपये सहायता राशि दी जाए

तोशाम। मांगों को लेकर ज्ञापन सौंपते हुए। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ⏭ तोशाम

शनिवार को एआईयूटीयूसी व स्कीम वर्कर्स फेडरेशन ऑफ इण्डिया से संबंद्ध मिड-डे-मील कार्यकर्ता यूनियन हरियाणा के बैनर तले मिड-डे मील कर्मियों ने अपनी 10 सूत्री मांगों को लेकर कस्बे में प्रदर्शन किया और एसडीएम तोशाम के माध्यम से मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा।

उन्होंने ज्ञापन के माध्यम से प्रांत में घोषित न्यूनतम वेतन 15220 रुपये मासिक देने, केंद्र व राज्य का मानदेय एक साथ समय पर भुगतान करने, साल में ड्रेस के कम से कम तीन हजार रुपये देने, सेवानिवृत्ति की आयु 65 वर्ष करने और सेवानिवृत्ति पर 5 लाख रुपये सहायता राशि और पेंशन देने, ड्यूटी के दौरान मृत्यु पर कम से कम 5 लाख रुपये मुआवजा देने, महंगाई के हिसाब से बच्चों के राशन के पैसे बढ़ाने, यूनियन की महासचिव कुसुम पांचाल समेत हटायी गई सभी वर्कर्स को ड्यूटी पर लेने, कुक को नियमित सरकारी कर्मचारी का दर्जा देन और ग्रीष्मकालीन अवकाश का वेतन काटने के बजाय पूरे 12 महीने का मानदेय देने की मांग की गई।

इयूटी रोजाना 8 घंटे और मानदेय सिर्फ 7000

यूनियन की जिला प्रधान मीरा देवी ने कहा कि हम रोजाना 8 घण्टे काम करती हैं। लेकिन इतनी कड़ी मेहनत करने पर भी मिड-डे-मील कुक-कम-हेल्परों को मामूली-सा 7000 रुपये मासिक मानदेय मिलता है और यह भी समय पर नहीं मिलता है। इसका केंद्र का हिस्सा मिलने में तो कई-कई महीने गुजर जाते हैं। हमें साल में मात्र 10 माह का मानदेय मिलता है, जबकि बाकी सबको 12 माह का मिलता है। यह सरासर भेदभाव है। इसलिए 12 महीने का वेतन और समय पर भुगतान सुनिश्चित किया जाए। दो ड्रेस के मात्र 600 रुपये मिलते हैं, जिसमें सिलाई भी नहीं होती है। आज बढ़ती महंगाई इतने कम पैसों में गुजारा करना मुश्किल है। हरियाणा सरकार ने अभी जो 15220 रुपये मासिक न्यूनतम वेतन घोषित किया है, सबका वेतन बढ़ाया गया, लेकिन हमारा तो वह भी नहीं बढ़ाया गया है। हमारी यूनियन की महासचिव कुसुम पांचाल समेत कई कर्मियों को नौकरी से निकाला हुआ है। हमारा अनुरोध है कि उनको बहाल किया जाए। श्रमिक नेताओं ने कहा कि मिड-डे-मील कार्यकर्ताओं सहित सभी स्कीम वर्कर्स को सामाजिक सुरक्षा के दायरे लाना, जीने लायक वेतन देना, आज कमरतोड़ महंगाई में देना तो चाहिए 28000 रुपये ासिक वेतन, लेकिन सरकार द्वारा घोषित न्यूनतम वेतन जितना मानदेय भी नहीं दिया जा रहा है। वक्ताओं ने मिड-डे-मील कर्मियों से भी ज्वलंत मांगों को लेकर आन्दोलन तेज करने का आह्वान किया और 24 जून को भिवानी में प्रांतीय स्तर के प्रदर्शन में बढ़चढ़कर शामिल होने की पुरजोर अपील की।

ये रहीं मौजूद

इस दौरान प्रदर्शन में गीता देवी, कविता देवी, सुमन कुमारी, माया देवी, किरण, सुनीता, प्रमिला, पिंकी आदि मौजूद थीं।

अवैध कॉलोनी पर चला पीला पंजा

भिवानी। जिला नगर योजनाकार (डीटीपी) विभाग ने भिवानी-हांसी रोड पर मौजा राजपुरा-खरकड़ी में लगभग चार एकड़ क्षेत्र में विकसित की जा रही अवैध कॉलोनी पर तोड़फोड़ अभियान चलाया। कार्रवाई के दौरान कॉलोनी में बनाए गए कार्यालय ढांचे तथा कच्चे सड़क

नेटवर्क को जेसीबी मशीनों की मदद से ध्वस्त कर दिया गया। डीटीपी के अधिकारियों ने बताया कि यह कॉलोनी बिना सक्षम अनुमति और आवश्यक स्वीकृतियों के विकसित की जा रही थी। अभियान पुलिस बल मौजूदगी में शांतिपूर्वक संपन्न कराया गया। विभाग ने स्पष्ट किया कि शहरी एवं नियंत्रित क्षेत्रों में अवैध रूप से विकसित की जा रही कॉलोनियों के खिलाफ भविष्य में भी लगातार कार्रवाई जारी रहेगी।

मांगों को लेकर सड़कों पर उतरे मिल कर्मचारी

भिवानी। मांगों को लेकर बीटीएम के मजदूरों का गुस्सा सड़कों पर फूट पड़ा। सैकड़ों मजदूर कर्मचारियों ने मिल प्रशासन के खिलाफ मोर्चा खोलते हुए शहरभर में प्रदर्शन किया और विधायक सर्राफ के आवास पहुंचकर मांगों को लेकर ज्ञापन सौंपा। इस दौरान मजदूरों ने मिल प्रबंधक पर न्यूनतम वेतन का लाभ न दिए जाने का आरोप लगाया। जिसके चलते उन्होंने मिल का काम बंद कर आंदोलन शुरू कर दिया है। उन्होंने चेतावनी दी कि जब तक उनकी मांगों को पूरा नहीं किया जाता , तब तक उनका आंदोलन जारी रहेगा। शनिवार को कपड़ा मिल के सैकड़ों मजदूर कर्मचारियों ने अपनी मांगों को लेकर जोरदार प्रदर्शन किया। मजदूरों ने जुलूस मिल के मुख्य द्वार से शुरू किया। जुलूस घंटाघर होते हुए विधायक घनश्याम सर्राफ के आवास पर पहुंचा। कर्मचारी नेताओं का कहना है कि सरकार ने हाल ही में न्यूनतम वेतन बढ़ाकर 15, 221 रुपये निर्धारित किया था, लेकिन मिल प्रशासन उन्हें केवल 11, 221 रुपये का ही वेतन दे रहा है। मजदूरों का आरोप है कि शुरुआत में उन्हें एक महीने बढ़े हुए वेतन का भुगतान किया गया, लेकिन उसके बाद फिर से पुराने वेतन पर ला दिया गया। विधायक सर्राफ ने कहा कि मजदूर उनके पास शिकायत लेकर पहुंचे हैं। उन्होंने मिल प्रशासन से बातचीत की है। मिल प्रबंधन ने समस्या के समाधान के लिए दो से तीन दिन का समय मांगा है।

GANGA INSTITUTE OF TECHNOLOGY AND MANAGEMENT
AN AUTONOMOUS INSTITUTE
Approved by AICTE | Affiliated to MDU, Rohtak
JHAJJAR (DELHI-NCR)
NAAC A GRADE
NBA ACCREDITED B.TECH ME, ECE and MBA

GITAM is among the BEST ENGINEERING INSTITUTES OF THE COUNTRY !
RANKED #16 In North India
RANKED #38 Pvt. Institutes in India
RANKED #39 Across India
RANKED #46 Placement Across India
Industry Oriented Curriculum
Degree Conferred by MDU, Rohtak
Times Engineering Institute Ranking Survey-2026

ADMISSIONS OPEN 2026-27

B.TECH B.TECH (LEET)
Fire Technology and Safety
CSE, CSE (AI & ML), CSE (DS)
ECE, Electrical
Civil, Mechanical

OTHER UG & PG COURSES
M.TECH | MBA | BBA | MCA
BCA | M.ARCH | B.ARCH
M.PLAN | M.ED | B.ED

COURSES FOR WORKING PROFESSIONALS (in Flexible Timings)
B.TECH
Fire Tech. & Safety / CSE/ Electrical/Civil
M.TECH
CSE / Structural Design
MBA | MCA

For Admission Enquiry
8684000891 / 892 / 893 / 906 / 9654292946
www.gangainstitute.com

GANGA GROUP OF INSTITUTIONS
Approved by AICTE/UGC/NCTE/COA/MDU
GANGA INSTITUTE OF ARCHITECTURE & TOWN PLANNING (GIATP)
9654292905 / 9015115120 | www.architectureganga.com
GANGA INSTITUTE OF EDUCATION (GIE)
8684000916 | www.gangainstituteofeducation.com
Head Office: 4/12, East Punjabi Bagh, New Delhi | +91-9654292902, 03, 04

TATA की पेशकश

आपका पुराना सोना बनाए आत्मनिर्भर भारत

भारत अपना 99% सोना इम्पोर्ट करता है

लेकिन अगर आप अपने पुराने सोने को एक्सचेंज करके नई ज्वेलरी खरीदेंगे तो सोना इम्पोर्ट करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।

तनिष्क में अपना पुराना सोना एक्सचेंज कीजिए, और भारत को और भी आत्मनिर्भर बनाइए।

0% फ्लैट 0% कटौती* एक्सचेंज पर, किसी भी ज्वेलर से खरीदे 9 कैरेट जितने कम पुराने सोने पर

उन 36 लाख लोगों में शामिल हो जाइए जिन्होंने तनिष्क से अपना पुराना सोना एक्सचेंज किया है।

“इस प्रयास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनने के लिए आप सबको दिल से धन्यवाद। पुराने सोने का हर एक्सचेंज सोने के आयात को घटाता है और भारत को और भी ज़्यादा आत्म-निर्भर बनाता है।”
-सचिन तेंडुलकर

TANISHQ — GOLD EXCHANGE

किसी भी ज्वेलर का पुराना सोना एक्सचेंज कीजिए।
साल भर एक्सचेंज की सुविधा।
1,00,000+ से अधिक डिज़ाइनों में से चुनिए अपनी पसंद।
एक्सचेंज से गोल्ड तथा डायमंड डिजाइन्स में अपग्रेड करें।

Talk to our jewellery expert to know more 1800 2966 677 Buy online at tanishq.co.in or Download our App *Conditions apply, For T&C visit our website.

शोरुम :- विजय नगर, केएम सीनियर सेकेण्डरी स्कूल के पास, हांसी गेट, भिवानी टेली. 77290-93000

Scan the QR code to find the nearest Tanishq store

महंगाई व टैक्स के दौर में

एफडी क्या सचमुच बढ़ा रही है बचत

तैयारी
बिजनेस डेस्क

खास बातें

1. 5 प्रतिशत महंगाई के बीच एफडी कैसे बन रहा है सीमित कमाई का साधन
2. विशेषज्ञों ने दी निवेश की रणनीति बदलने की सलाह
3. सुरक्षित निवेश तो है, लेकिन लंबी अवधि में संपत्ति निर्माण के लिए अकेली एफडी काफी नहीं

फिक्स्ड डिपॉजिट आज भी पूंजी की सुरक्षा और स्थिर आय के लिए एक मजबूत विकल्प है, लेकिन केवल एफडी के भरोसे लंबी अवधि में बड़ी संपत्ति बनाना आसान नहीं है। महंगाई और टैक्स मिलकर इसके वास्तविक रिटर्न को काफी कम कर सकते हैं। इसलिए निवेशकों को अपनी जरूरत, लक्ष्य और जोखिम क्षमता के अनुसार एफडी के साथ अन्य निवेश विकल्पों का संतुलित उपयोग करना चाहिए। आखिरकार निवेश की असली सफलता बैंक बैलेंस बढ़ने में नहीं, बल्कि समय के साथ आपकी क्रय शक्ति बढ़ने में छिपी होती है।

भारत में फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) को लंबे समय से सुरक्षित और भरोसेमंद निवेश का प्रतीक माना जाता रहा है। निश्चित ब्याज, पूंजी की सुरक्षा और आसान प्रक्रिया के कारण लाखों निवेशक अपनी बचत एफडी में लगाते हैं। लेकिन बदलते आर्थिक माहौल में केवल ब्याज दर को देखकर निवेश का आकलन करना पर्याप्त नहीं रह गया है। विशेषज्ञों का मानना है कि किसी भी निवेश की वास्तविक सफलता इस बात से तय होती है कि वह महंगाई और करों का असर झेलने के बाद निवेशक की क्रय शक्ति को कितना बढ़ा पाता है। यदि एफडी पर मिलने वाला रिटर्न महंगाई दर के बराबर या उससे कम है, तो खाते में रकम बढ़ने के बावजूद वास्तविक लाभ सीमित रह जाता है। खासकर उच्च आयकर स्लैब वाले निवेशकों के लिए टैक्स कटने के बाद एफडी का रिटर्न और कम हो जाता है। ऐसे में यह सवाल महत्वपूर्ण हो गया है कि क्या एफडी केवल धन सुरक्षित रखने का साधन है या फिर वास्तव में संपत्ति निर्माण का भी प्रभावी माध्यम है।

पूंजी सुरक्षा के लिए बेहतर, लेकिन वेल्थ क्रिएशन के लिए जरूरी है विविध निवेश रणनीति

महंगाई क्यों कम कर देती है

- मान लीजिए किसी निवेशक को एफडी पर 6 प्रतिशत ब्याज मिलता है और उसी अवधि में महंगाई दर 5 प्रतिशत रहती है। ऐसे में निवेशक का वास्तविक लाभ केवल 1 प्रतिशत के आसपास रह जाता है।
- वित्तीय सलाहकार इसी कारण ₹रियल रिटर्न₹ पर जोर देते हैं। रियल रिटर्न का अर्थ है निवेश से मिलने वाला वास्तविक लाभ, जो महंगाई घटाने के बाद बचता है।
- रियल रिटर्न = निवेश पर रिटर्न – महंगाई दर
- यदि एफडी का ब्याज 4.9 प्रतिशत और महंगाई 5 प्रतिशत है, तो निवेशक की क्रय शक्ति बढ़ने के बजाय घट भी सकती है।

एसबीआई की एफडी दरें क्या बताती हैं?

- 5 प्रतिशत महंगाई को आधार मानें तो छह महीने तक की छोटी अवधि वाली कई एफडी योजनाएं महंगाई को मात देने में संघर्ष करती दिखाई देती हैं। इन पर मिलने वाला ब्याज 3.05 प्रतिशत से 4.9 प्रतिशत के बीच है।
- हालांकि 1 से 3 वर्ष की अवधि वाली एफडी अपेक्षाकृत बेहतर स्थिति में हैं। इस अवधि में एसबीआई करीब 6.25 से 6.4 प्रतिशत तक ब्याज दे रहा है, जिससे वास्तविक रिटर्न लगभग 1.25 से 1.4 प्रतिशत तक पहुंचता है। दिलचस्प बात यह है कि 5 से 10 वर्ष तक की लंबी अवधि की एफडी में भी महंगाई के बाद वास्तविक लाभ बहुत अधिक नहीं बढ़ता। यानी केवल लंबी अवधि के लिए पैसा लॉक करने से बड़ा लाभ मिलने की गारंटी नहीं है।

टैक्स के बाद और घट जाता है रिटर्न

महंगाई के अलावा टैक्स भी एफडी निवेशकों की कमाई को प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए 6.4 प्रतिशत ब्याज वाली एफडी पर।

- शून्य टैक्स स्लैब में रिटर्नः 6.4%
- 20% टैक्स स्लैब में रिटर्नः 5.12%
- 30% टैक्स स्लैब में रिटर्नः 4.48%
- यानी 30 प्रतिशत टैक्स स्लैब वाले निवेशक के लिए 6.4 प्रतिशत का ब्याज प्रभावी रूप से 4.48 प्रतिशत रह जाता है, जो 5 प्रतिशत महंगाई से भी कम है। ऐसे में वास्तविक रिटर्न नकारात्मक हो सकता है।

लिक्विड फंड बन सकते हैं विकल्प

कम अवधि के निवेश के लिए लिक्विड फंड भी निवेशकों के बीच लोकप्रिय हो रहे हैं। उदाहरण के तौर पर, एक प्रमुख लिक्विड फंड ने पिछले एक वर्ष में 6.29 प्रतिशत रिटर्न दिया, जो अधिकांश एफडी योजनाओं के बराबर या उनसे बेहतर रहा। हालांकि एफडी की तरह लिक्विड फंड में रिटर्न की गारंटी नहीं होती। ये बाजार से जुड़े होते हैं और समय के साथ इनमें उतार-चढ़ाव संभव है।

फिर भी एफडी क्यों है पसंदीदा?

एफडी की लोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण इसकी सुरक्षा और निश्चितता है। निवेशक को पहले से पता होता है कि उसे कब और कितना पैसा मिलेगा। एफडी विशेष रूप से इन लोगों के लिए उपयुक्त मानी जाती हैः

- सेवानिवृत्त व्यक्ति
- आपातकालीन फंड रखने वाले निवेशक
- 1 से 3 वर्ष के लक्ष्यों के लिए बचत करने वाले लोग
- कम जोखिम पसंद करने वाले निवेशक

कौन-कौन से विकल्प उपलब्ध हैं?

- बेहतर महंगाई-समायोजित रिटर्न की तलाश करने वाले निवेशक अपनी जोखिम क्षमता के अनुसार निम्न विकल्पों पर विचार कर सकते हैं। ■ लिक्विड फंड
- मनी मार्केट और शॉर्ट ड्यूरेशन डेट फंड
- आरबीआई फ्लोटिंग रेट सेविंग्स बॉन्ड
- लंबी अवधि के लिए इक्विटी म्यूचुअल फंड

हर महिला को जरूर अपनानी चाहिए ये 5 वेल्थ मैनेजमेंट टिप्स

बिजनेस डेस्क

आज की महिलाएं सिर्फ परिवार और करियर की जिम्मेदारियां ही नहीं निभा रहीं, बल्कि आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने की दिशा में भी तेजी से आगे बढ़ रही हैं। बदलते दौर में वित्तीय सुरक्षा और संपत्ति निर्माण महिलाओं की प्राथमिकताओं में शामिल हो चुका है। हालांकि, कई महिलाएं अभी भी निवेश, बीमा और रिटायरमेंट प्लानिंग जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दे पातीं, जिससे भविष्य में आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि सही वित्तीय योजना और अनुशासित निवेश के जरिए महिलाएं न केवल अपने वर्तमान को सुरक्षित बना सकती हैं, बल्कि आने वाले वर्षों के लिए मजबूत आर्थिक आधार भी तैयार कर सकती हैं। नियमित निवेश, आपातकालीन फंड, पर्याप्त बीमा और वित्तीय निर्णयों में सक्रिय भागीदारी जैसे कदम महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाते हैं। आइए जानते हैं ऐसी पांच महत्वपूर्ण वेल्थ मैनेजमेंट टिप्स, जिन्हें अपनाकर महिलाएं अपने भविष्य को अधिक सुरक्षित और समृद्ध बना सकती हैं।

निवेश को करें ऑटोमेटिक

नियमित निवेश की आदत बनाने का सबसे आसान तरीका है निवेश को ऑटोमेट करना। इसके लिए सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) या फिर आरडी में निवेश कर सकते हैं और हर महीने नियमित निवेश कर सकते हैं। ऑटोमैटिक निवेश की सुविधा से करियर में बदलाव या आय में उतार-चढ़ाव के दौरान भी निवेश जारी रहता है। इससे समय के साथ कंपाउंडिंग का लाभ मिलता है और बिना ज्यादा निगरानी के अच्छी संपत्ति बनाई जा सकती है।

रिटायरमेंट के लिए अलग फंड बनाएं

रिटायरमेंट प्लानिंग को टालना भविष्य में आर्थिक परेशानी का कारण बन सकता है। ऐसे में करियर की शुरुआत से ही आय का एक हिस्सा रिटायरमेंट फंड के लिए अलग रखना चाहिए। इसके साथ ही बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य संबंधी खर्च और अन्य दीर्घकालिक लक्ष्यों के लिए भी अलग निवेश योजना बनाना फायदेमंद रहता है। समय-समय पर इन निवेशों की समीक्षा करना भी जरूरी है।

अपने फैसले खुद लें

आर्थिक आत्मनिर्भरता का मतलब सिर्फ कमाई करना नहीं, बल्कि अपने पैसों से जुड़े फैसले खुद लेना भी है। महिलाओं को निवेश, बचत, बीमा और टैक्स प्लानिंग जैसे विषयों की बुनियादी जानकारी रखनी चाहिए। जब आप अपने वित्तीय मामलों में सक्रिय भूमिका निभाती हैं, तो आत्मविश्वास बढ़ता है और महत्वपूर्ण आर्थिक निर्णयों के लिए दूसरों पर निर्भरता कम होती है।

वित्तीय फैसलों की जिम्मेदारी खुद लें

आर्थिक आत्मनिर्भरता का मतलब सिर्फ कमाई करना नहीं, बल्कि अपने पैसों से जुड़े फैसले खुद लेना भी है। महिलाओं को निवेश, बचत, बीमा और टैक्स प्लानिंग जैसे विषयों की बुनियादी जानकारी रखनी चाहिए। जब आप अपने वित्तीय मामलों में सक्रिय भूमिका निभाती हैं, तो आत्मविश्वास बढ़ता है और महत्वपूर्ण आर्थिक निर्णयों के लिए दूसरों पर निर्भरता कम होती है।

मजबूत इमरजेंसी फंड तैयार करें

जीवन में कब कौन सी चुनौती सामने आ जाए, इसका अनुमान लगाना मुश्किल है। नौकरी छूटना, स्वास्थ्य संबंधी समस्या या कोई अन्य अप्रत्याशित खर्च आर्थिक स्थिति को प्रभावित कर सकते हैं। ऐसे समय में इमरजेंसी फंड और पर्याप्त बीमा कवरेज ही काम आता है।

ईपीएफ का छिपा फायदा

8.25% ब्याज, लेकिन असली रिटर्न 11.8%

विशेषज्ञों का मानना है कि ईपीएफ केवल बचत का माध्यम नहीं, बल्कि रिटायरमेंट योजना की रीढ़ है। नियमित योगदान, चक्रवृद्धि ब्याज का लाभ, कर छूट और सरकारी निगरानी इसे एक भरोसेमंद निवेश बनाती है। यदि कर्मचारी नौकरी के शुरुआती वर्षों से ही ईपीएफ को गंभीरता से लें और बीच में निकासी से बचें, तो रिटायरमेंट तक एक बड़ा कोष तैयार किया जा सकता है।

तैयारी
बिजनेस डेस्क

भारत में नौकरीपेशा लोगों के लिए कर्मचारी भविष्य निधि (ईपीएफ) लंबे समय से रिटायरमेंट बचत का एक भरोसेमंद माध्यम रहा है। हर महीने वेतन से कटने वाली राशि और उस पर मिलने वाला ब्याज कर्मचारियों को भविष्य के लिए आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है। हालांकि कई लोग ईपीएफ को केवल एक अनिवार्य बचत योजना मानते हैं और इसकी तुलना म्यूचुअल फंड, शेयर बाजार या अन्य निवेश विकल्पों से करते हुए इसे कम रिटर्न वाला निवेश समझ बैठते हैं। लेकिन वित्तीय विशेषज्ञों का कहना है कि ईपीएफ की वास्तविक ताकत केवल इसकी घोषित ब्याज दर में नहीं, बल्कि इसके साथ मिलने वाले कर लाभ और पूंजी सुरक्षा में छिपी है। वर्तमान में ईपीएफ पर 8.25 प्रतिशत की दर से ब्याज मिल रहा है। पहली नजर में यह रिटर्न सामान्य लग सकता है, लेकिन यदि कर लाभों को भी जोड़कर देखा जाए तो पुराने टैक्स रिजीम में 30 प्रतिशत टैक्स स्लैब वाले कर्मचारियों के लिए इसका प्रभावी रिटर्न लगभग 11.8 प्रतिशत तक पहुंच सकता है। यही कारण है कि वित्तीय योजनाकार ईपीएफ को नौकरीपेशा लोगों के लिए सबसे मजबूत और सुरक्षित रिटायरमेंट निवेश विकल्पों में गिनते हैं।

टैक्स छूट, टैक्स-फ्री ब्याज और सुरक्षित निवेश का लाभ

आयकर अधिनियम की धारा 80सी के तहत उसे लगभग 30 हजार रुपये तक की टैक्स बचत मिल सकती है। इसका मतलब यह हुआ कि कर्मचारी की जेब से वास्तविक रूप से केवल 70 हजार रुपये का खर्च हुआ, लेकिन ब्याज पूरे 1 लाख रुपये पर मिलेगा। 8.25 प्रतिशत की ब्याज दर के हिसाब से एक वर्ष में 8,250 रुपये का ब्याज प्राप्त होगा। यदि इस ब्याज को वास्तविक निवेश यानी 70 हजार रुपये के अनुपात में देखा जाए तो प्रभावी रिटर्न लगभग 11.8 प्रतिशत के बराबर बैठता है। यही वह गणित है जिसे कई कर्मचारी नजरअंदाज कर देते हैं और केवल घोषित ब्याज दर देखकर ईपीएफ के वास्तविक लाभ का आकलन नहीं कर पाते।

ईपीएफ की बड़ी ताकत है ईपीएफ टैक्स सुविधा

वित्तीय विशेषज्ञों के अनुसार EPF की सबसे बड़ी विशेषता इसका ईईई टैक्स ढांचा है। भारत में बहुत कम निवेश विकल्प ऐसे हैं जो यह तीनहरा लाभ प्रदान करते हैं। पहला लाभ निवेश के समय मिलता है। कर्मचारी द्वारा ईपीएफ में जमा की गई राशि पर धारा 80सी के तहत कर छूट का दावा किया जा सकता है। दूसरा लाभ निवेश अवधि के दौरान मिलता है। ईपीएफ खाते में जमा राशि पर मिलने वाला ब्याज पूरी तरह कर मुक्त होता है। तीसरा लाभ निकासी के समय मिलता है। यदि कर्मचारी ने पांच वर्ष या उससे अधिक समय तक लगातार सेवा की है, तो ईपीएफ से निकाली गई राशि भी कर मुक्त रहती है। यानी निवेश से लेकर निकासी तक तीनों चरणों में कर राहत मिलती है। यही वजह है कि ईपीएफ को कर-कुशल निवेश विकल्प माना जाता है।

कैसे बढ़ जाता है ईपीएफ का वास्तविक रिटर्न?

अधिकांश निवेशक किसी भी योजना का मूल्यांकन केवल उस पर मिलने वाले ब्याज या रिटर्न के आधार पर करते हैं। लेकिन ईपीएफ के मामले में यह तरीका पूरी तस्वीर नहीं दिखाता। इसकी वजह यह है कि ईपीएफ निवेश पर कर छूट का अतिरिक्त लाभ मिलता है। मान लीजिए कोई कर्मचारी एक वर्ष में ईपीएफ में 1 लाख रुपये का योगदान करता है। यदि वह पुराने टैक्स रिजीम में है और 30 प्रतिशत टैक्स स्लैब के अंतर्गत आता है, तो

नए टैक्स रिजीम में भी बना हुआ है आकर्षण

सरकार द्वारा लागू किए गए नए टैक्स रिजीम में धारा 80सी के तहत मिलने वाली अधिकांश कर छूट समाप्त कर दी गई है। ऐसे में कुछ लोगों को लगता है कि ईपीएफ का महत्व कम हो गया है। हालांकि ऐसा पूरी तरह सही नहीं है। भले ही नए टैक्स रिजीम में ईपीएफ योगदान पर कर छूट न मिले, लेकिन खाते में मिलने वाला ब्याज अभी भी कर मुक्त रहता है और निर्धारित शर्तों के तहत निकासी पर भी टैक्स नहीं लगता। इसलिए यह योजना आज भी रिटायरमेंट बचत के लिए एक आकर्षक विकल्प बनी हुई है। हालांकि वर्तमान नियमों के अनुसार कर्मचारी के 2.5 लाख रुपये से अधिक वार्षिक योगदान पर मिलने वाले अतिरिक्त ब्याज के एक हिस्से पर कर लगाया जा सकता है। यह प्रावधान मुख्य रूप से उच्च आय वाले कर्मचारियों पर लागू होता है।

सही होम लोन के चुनाव से मिलेगा बड़ा फायदा

मोरेटोरियम, नो-ईएमआई-टिल-पजेशन व बैलून पेमेंट से अति. लाभ | होम लोन का चयन करने से पहले विकल्पों को अच्छी तरह समझें

बिजनेस डेस्क

आज के समय में अपना घर खरीदना अधिकांश लोगों का सपना होता है, लेकिन लगातार बढ़ती प्रॉपर्टी कीमतों के कारण यह सपना पूरा करना आसान नहीं रह गया है। ऐसे में होम लोन लाखों लोगों के लिए घर खरीदने का सबसे बड़ा सहारा बनता है। हालांकि होम लोन लेते समय अधिकांश लोग केवल ब्याज दर और ईएमआई पर ध्यान देते हैं, जबकि बैंक और हाउसिंग फाइनेंस कंपनियां ग्राहकों की जरूरतों के अनुसार कई तरह के लोन विकल्प भी उपलब्ध कराती हैं। इन विकल्पों में मोरेटोरियम लोन, नो-ईएमआई-टिल-पजेशन स्कीम और बैलून पेमेंट लोन प्रमुख हैं। प्रत्येक योजना की अपनी विशेषताएं, फायदे और कुछ सीमाएं हैं। इसलिए किसी भी होम लोन का चयन करने से पहले इन विकल्पों को अच्छी तरह समझना जरूरी है।

मोरेटोरियम लोन देता है राहत

मोरेटोरियम लोन उन लोगों के लिए उपयोगी माना जाता है जो कुछ समय के लिए आर्थिक दबाव का सामना कर रहे हों या भविष्य में उनकी आय बढ़ने की संभावना हो। इस योजना में उधारकर्ता को एक निश्चित अवधि तक नियमित ईएमआई का भुगतान नहीं करना पड़ता। हालांकि यह सुविधा पूरी तरह मुफ्त नहीं होती। मोरेटोरियम अवधि के दौरान भी लोन पर ब्याज लगातार जुड़ता रहता है। बाद में यह ब्याज मूल बकाया राशि में जोड़ दिया जाता है।

नो-ईएमआई-टिल-पजेशन योजना

वर्तमान समय में बड़ी संख्या में लोग निर्माणाधीन परियोजनाओं में घर खरीदते हैं। ऐसे खरीदारों के लिए नो-ईएमआई-टिल-पजेशन स्कीम आकर्षक विकल्प हो सकती है। इस योजना में घर का कब्जा मिलने तक खरीदार को नियमित ईएमआई का भुगतान नहीं करना पड़ता। कई मामलों में बिल्डर इस अवधि के दौरान ब्याज या ईएमआई का खर्च वहन करता है। इससे खरीदार पर तत्काल वित्तीय बोझ कम हो जाता है। यह योजना विशेष रूप से उन लोगों के लिए फायदेमंद मानी जाती है जो वर्तमान में किराए के मकान में रह रहे हैं और साथ ही नया घर भी खरीद रहे हैं। इससे उन्हें एक साथ किराया और ईएमआई दोनों का बोझ नहीं उठाना पड़ता। हालांकि विशेषज्ञों का मानना है कि इस सुविधा की लागत अक्सर किसी न किसी रूप में प्रॉपर्टी की कीमत में शामिल हो सकती है। इसलिए ग्राहकों को योजना के सभी नियम और शर्तें ध्यान से पढ़नी चाहिए।

बैलून पेमेंट लोन बेहतर

बैलून पेमेंट लोन पारंपरिक होम लोन से थोड़ा अलग होता है। इसमें शुरुआती वर्षों के दौरान ईएमआई अपेक्षाकृत कम रखी जाती है, जिससे मासिक भुगतान का दबाव कम रहता है। लेकिन लोन की अवधि के अंतिम चरण में उधारकर्ता को एक बड़ी राशि एकमुश्त चुकानी होती है। इसी बड़े अंतिम भुगतान को बैलून पेमेंट कहा जाता है। यह विकल्प उन लोगों के लिए उपयुक्त हो सकता है जिन्हें भविष्य में आय में उल्लेखनीय वृद्धि की उम्मीद हो। उदाहरण के लिए किसी कर्मचारी को बड़े बोनस, ईएसओपी (ईएसओपी) से लाभ या वेतन में महत्वपूर्ण बढ़ोतरी की संभावना हो। वहीं व्यवसायियों को भविष्य में किसी बड़े लाभ की उम्मीद हो सकती है। हालांकि यदि अनुमानित आय वृद्धि नहीं होती तो अंतिम भुगतान करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। इसलिए इस विकल्प को चुनते समय वित्तीय स्थिति का वास्तविक आकलन करना जरूरी है।

लोन लेते समय रखें ध्यान

होम लोन का कोई भी विशेष विकल्प चुनने से पहले केवल कम ईएमआई या शुरुआती राहत को देखकर फैसला नहीं करना चाहिए। यह समझना जरूरी है कि लंबे समय में कुल भुगतान कितना होगा और अतिरिक्त सुविधाओं की वास्तविक लागत क्या है। ग्राहकों को लोन की कुल अवधि, कुल ब्याज भुगतान, संभावित जोखिम और अपनी भविष्य की आय की स्थिति का मूल्यांकन करना चाहिए। इसके अलावा सभी नियमों और शर्तों को विस्तार से पढ़ना भी जरूरी है।

जरूरत अनुसार चुनें सही विकल्प

हर व्यक्ति की आर्थिक स्थिति और जरूरत अलग होती है। इसलिए कोई भी एक लोन योजना सभी के लिए उपयुक्त नहीं हो सकती। जहां मोरेटोरियम लोन अस्थायी राहत प्रदान करता है, वहीं नो-ईएमआई-टिल-पजेशन योजना निर्माणाधीन मकान खरीदने वालों के लिए फायदेमंद हो सकती है। दूसरी ओर बैलून पेमेंट लोन उन लोगों के लिए उपयोगी साबित हो सकता है जिन्हें भविष्य में अधिक आय की उम्मीद हो। विशेषज्ञों का मानना है कि सही जानकारी और सावधानीपूर्वक मूल्यांकन के साथ चुना गया होम लोन न केवल घर खरीदने का सपना पूरा करता है, बल्कि लंबे समय तक वित्तीय संतुलन बनाए रखने में भी मदद करता है।

डबल इनकम, डबल सुरक्षा : नौकरीपेशा दंपतियों के लिए कुछ जरूरी वित्तीय नियम

पति-पत्नी दोनों कमाते हैं तो सही बजट, नियमित संवाद जरूरी

बेहतर आर्थिक भविष्य के लिए स्वास्थ्य सुरक्षा भी उतनी ही जरूरी है। नियमित स्वास्थ्य जांच, मेडिकल इमरजेंसी फंड और पर्याप्त स्वास्थ्य बीमा परिवार को अचानक आने वाले खर्चों से बचा सकते हैं। इसके अलावा जीवन बीमा भी परिवार की आर्थिक सुरक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है।

तैयारी
बिजनेस डेस्क

आज के दौर में जब पति-पत्नी दोनों नौकरी करते हैं, तो परिवार की आय बढ़ने के साथ-साथ आर्थिक अवसर भी बढ़ जाते हैं। घर खरीदने, बच्चों की शिक्षा, बेहतर जीवनशैली और सुरक्षित रिटायरमेंट जैसे बड़े लक्ष्य अपेक्षाकृत आसानी से हासिल किए जा सकते हैं। हालांकि दोहरी आय के साथ वित्तीय प्रबंधन की जिम्मेदारी भी बढ़ जाती है। कई बार खर्च, बचत और निवेश को लेकर स्पष्ट योजना न होने से मतभेद और आर्थिक असंतुलन पैदा हो सकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि डबल इनकम वाले दंपतियों के लिए नियमित वित्तीय चर्चा, साझा बजट, व्यक्तिगत और संयुक्त खर्चों के बीच संतुलन, पर्याप्त बीमा और अनुशासित निवेश बेहद जरूरी हैं। यदि दोनों साथी मिलकर स्पष्ट वित्तीय लक्ष्य तय करें और उनके अनुसार योजना बनाएं, तो न केवल वर्तमान जरूरतें बेहतर ढंग से पूरी की जा सकती हैं, बल्कि भविष्य की आर्थिक चुनौतियों का सामना भी आसानी से किया जा सकता है। छोटी-छोटी वित्तीय आदतें लंबे समय में बड़ी सफलता की नींव बनती हैं।

'मेरा, तुम्हारा और हमारा' फॉर्मूला अपनाएं

शादी के बाद भी आर्थिक स्वतंत्रता का महत्व बना रहता है। इसके लिए आय को तीन हिस्सों में बांटा जा सकता है। एक हिस्सा साझा खर्चों और पारिवारिक लक्ष्यों के लिए, जबकि बाकी दोनों पार्टनर के व्यक्तिगत खर्चों के लिए रखा जा सकता है। इससे जिम्मेदारियों और व्यक्तिगत जरूरतों के बीच संतुलन बना रहता है।

पैसों को लेकर खुलकर करें बातचीत

अक्सर दंपति आय और खर्चों को लेकर नियमित चर्चा नहीं करते, जिससे कई बार गलतफहमियां पैदा हो जाती हैं। विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि हर महीने एक तय समय पर बैठकर आय, खर्च, बचत और भविष्य की योजनाओं पर चर्चा करनी चाहिए। इससे वित्तीय फैसले पारदर्शी बनते हैं और आपसी विश्वास भी मजबूत होता है।

सही वित्तीय योजना से रख सकते हैं सुरक्षित और समृद्ध भविष्य की मजबूत नींव

मिलकर बनाएं संतुलित बजट

दोनों की कुल आय को ध्यान में रखते हुए मासिक बजट तैयार करना जरूरी है। इसमें घर का किराया, राशन, बच्चों की जरूरतें, यात्रा और अन्य नियमित खर्चों के साथ भविष्य के लक्ष्यों के लिए भी राशि निर्धारित करनी चाहिए। एक व्यवस्थित बजट अनावश्यक खर्चों पर नियंत्रण रखने में मदद करता है।

बचत और निवेश को बनाएं आदत

दोहरी आय का सबसे बड़ा लाभ तभी मिलता है जब उसका एक हिस्सा नियमित रूप से बचत और निवेश में लगाया जाए। विशेषज्ञ कम से कम छह महीने के खर्चों के बराबर इमरजेंसी फंड बनाने की सलाह देते हैं। इसके बाद जोखिम क्षमता और वित्तीय लक्ष्यों के अनुसार म्यूचुअल फंड, पीपीएफ, एनपीएस या अन्य निवेश विकल्पों में निवेश किया जा सकता है।

छोटी आदतें, बड़ा फायदा

वित्तीय विशेषज्ञों का कहना है कि आर्थिक सफलता किसी एक बड़े फैसले से नहीं, बल्कि रोजमर्रा की छोटी और अनुशासित आदतों से हासिल होती है। नियमित संवाद, सही बजट, पर्याप्त सुरक्षा और व्यवस्थित निवेश के जरिए डबल इनकम वाले दंपति अपने सपनों को तेजी से पूरा कर सकते हैं और भविष्य को अधिक सुरक्षित बना सकते हैं।

खबर संक्षेप

सिल्वर जुबली समारोह आज होगा आयोजित

भिवानी। कृष्णा कॉलोनी स्थित शिव सागर मन्दिर के निर्माण के 25 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में 14 जून रविवार को सिल्वर जुबली समारोह का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर मंदिर परिसर में विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों की श्रृंखला आयोजित की जाएगी। हेमराज खन्ना व राजकुमार जावा ने बताया कि मन्दिर की स्थापना 11 जून 2001 को जोगीवाला मन्दिर के महंत वेदनाथ महाराज के कर-कमलों से की गई थी। मन्दिर के विकास और गतिविधियों में योगाश्रम से स्वामी कृष्णानन्द सरस्वती महाराज की प्रेरणा का निरंतर सहयोग मिलता रहा है।

बालश्रम को रोकने की जानकारी दी

भिवानी। जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण (डीएलएसए) भिवानी द्वारा विश्व बाल श्रम निषेध दिवस के अवसर पर जिले में जागरूकता अभियान चलाया गया। जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण के चेयरमैन एवं जिला एवं सत्र न्यायाधीश डॉ. गगनदीप कौर सिंह के निर्देशानुसार तथा सीजेएम-कम-सचिव पवन कुमार के मार्गदर्शन में अधिकार मित्रों एवं जिला बाल कल्याण समिति व श्रमिक विभाग के अधिकारियों के सहयोग से जिले के विभिन्न ईंट-भट्टों पर पहुंचकर श्रमिकों को बाल श्रम के दुष्प्रभावों और इससे बचाव के संबंध में जानकारी दी।

डिजीटल सुशासन से पंचायतों को मिलेगी नई दिशा : चौहान

भिवानी। ग्राम पंचायतों में तकनीक आधारित योजना निर्माण, पारदर्शिता और जनभागीदारी को बढ़ावा देकर ग्रामीण विकास को नई दिशा और गति दी जा सकती है। ये विचार हरियाणा ग्रामीण विकास संस्थान के निदेशक डॉ. वीरेंद्र सिंह चौहान ने भिवानी में आयोजित पंचायत विकास योजना एवं अद्यतन ई-ग्राम स्वराज पोर्टल फॉर पीपुल्स प्लान कैंपेन 2026-27 विषयक प्रशिक्षण कार्यक्रम को वर्चुअल माध्यम से संबोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि अद्यतन ई-ग्राम स्वराज पोर्टल पंचायतों में डिजिटल प्रशासन को मजबूत बनाने का प्रभावी माध्यम है।

अंडर-13 बालक युगल के फाइनल में गर्वित व सम्राट की जोड़ी जीती

जिला बैडमिंटन चैंपियनशिप के पहले दिन गर्वित, सैना व पूर्वी बने चैंपियन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ चरखी दादरी

जिला बैडमिंटन संघ द्वारा आयोजित 10वीं जिला बैडमिंटन चैंपियनशिप 2026 के पहले दिन रोमांचक मुकाबले खेले गए। प्रतियोगिता के शुभारंभ पर बाढड़ा विधायक उमेद सिंह पातुवास ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। विशिष्ट अतिथियों में बीजेपी जिला महामंत्री रविंद्र सिंह सिलगर, हरियाणा स्विमिंग एसोसिएशन के उपाध्यक्ष इंद्र सिंह फोगाट, पार्षद कुलदीप सैनी और आर्यन्स मॉडल सीनियर सेकेंडरी स्कूल के डायरेक्टर विक्रम सिंह फोगाट शामिल रहे।

- विधायक उमेद पातुवास ने विजेताओं को किया सम्मानित

चरखी दादरी। प्रतियोगिता का शुभारंभ करते विधायक उमेद पातुवास।

बालक एकल में अयान ने नेलेश व अरमान ने मयंक को दी मात

लोकेश गुप्ता ने बताया की बालक एकल अंडर-15 के क्वार्टर फाइनल में हिमांशु ने तेजस व मनन ने अंशुमान, अंश फोगाट ने सम्राट को और शौर्य सिवाच ने मोक्ष को हराकर सेमीफाइनल में प्रवेश किया। अंडर-17 बालक एकल में अयान ने नेलेश सांगवान को और अरमान ने मयंक को मात दी। इस दौरान संरक्षक एचसी गोदारा, प्रधान पंकज जैन, सीनियर वाइस प्रेसिडेंट सुरेश गोयल, आईसी जैन, डॉ. विजय शर्मा, उपप्रधान सुनील गर्ग, महासचिव लोकेश गुप्ता, सहसचिव दिनेश मुंजाल, कोषाध्यक्ष मनीष जांगड़ा, टेक्निकल एडवाइजर अमित, प्रेस सचिव अभिषेक जैन, कोच नरेश सैनी आदि पदाधिकारी मौजूद रहे।

अंडर-17 मिक्स्ड डबल्स में मानव और अन्वी की जोड़ी ने अरमान और दीक्षा को हराया

अंडर-13 बालक एकल वर्ग में मुकुल और रेहान ने शानदार खेल दिखाते हुए फाइनल का सफर तय किया। सेमीफाइनल में मुकुल ने गगन को एकतरफा मैच में 15-2 व 15-4 से और रेहान ने सम्राट को कड़े मुकाबले में 15-14 व 15-9 से मात दी। इससे पहले क्वार्टर फाइनल में मुकुल ने हर्षित को, गगन ने आर्यन सोनी को, रेहान ने गवांश को और सम्राट ने गर्वित शर्मा को हराया था। वहीं अंडर-13 बालक युगल के फाइनल में गर्वित और सम्राट की जोड़ी ने हर्षित और रेहान को सीधे सेटों में 15-4 व 15-9 से हराकर जीत हासिल की। महासचिव लोकेश गुप्ता ने बताया कि चैंपियनशिप के अन्य मुकाबलों में अंडर-11 गर्ल्स सिंगल्स में सैना ने ताक्शी को 15-11 व 15-10 से हराया। अंडर-11 बॉयज सिंगल्स में गर्वित शर्मा ने अयान सोनी को 15-09 व 15-10 से शिकस्त दी। अंडर-15 गर्ल्स सिंगल्स में पूर्वी ने दीक्षा को 15-10 व15-11 से मात दी। पूर्वी ने मिक्स्ड डबल्स में भी अपना जलवा बिखेरा, अंडर-15 मिक्स्ड डबल्स में मानव और पूर्वी की जोड़ी ने दीपांशु फोगाट व पलक फोगाट को 15-11, 15-12 से हराकर डबल धमाल किया। अंडर-17 मिक्स्ड डबल्स में मानव और अन्वी की जोड़ी ने अरमान और दीक्षा को 15-12, 15-11 से हराया।

तोशाम। महाविद्यालय में योग करते हुए साधक। फोटो : हरिभूमि

योग प्राचीन संस्कृति व स्वस्थ जीवनशैली का आधार : संदीप

हरिभूमि न्यूज ▶▶ तोशाम

- अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की थीम वरिष्ठ नागरिकों के स्वास्थ्य और कल्याण पर आधारित

एसडीएम संदीप कुमार के कुशल मार्ग दर्शन में चौधरी बंसीलाल राजकीय महिला महाविद्यालय में आयोजित योगाभ्यास में रानी, सीमा, नवीन, नीलम सहित कस्बे के कई गणमान्य नागरिक शामिल हुए। शनिवार को 12वें अंतर्राष्ट्रीय उपलक्ष्य में महाविद्यालय में उपमंडल स्तरीय योग अभ्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

उन्होंने योग को दैनिक जीवन का हिस्सा बनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि शरीर, मन और आत्मा को जोडने वाली भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। इस वर्ष सरकार द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की थीम वरिष्ठ नागरिकों के स्वास्थ्य और कल्याण पर आधारित है। योग बढ़ती आयु में स्वस्थ, सक्रिय और सम्मानजनक जीवन जीने के लिए योग एक प्रभावी माध्यम है। योग न केवल विभिन्न बीमारियों से बचाव करता है, बल्कि मानसिक शांति, ऊर्जा और आत्मबल भी प्रदान करता है। एसडीएम संदीप ने कहा कि पीएम मोदी के प्रयासों से ही योग विश्व मंच पर स्थापित हुआ हैं। प्रधानमंत्री मोदी के प्रयासों के कारण अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस विश्व स्तर पर अपनी छाप छोड़ चुका है। इस अवसर पर आयुष विभाग से डिस्पेंसर प्रदीप भानखड़, योग सहायक मोहन ख्यालिया विद्यार्थियों, महिलाओं, वरिष्ठ नागरिकों, अधिकारियों एवं अन्य प्रतिभागियों के साथ सामूहिक योगाभ्यास किया।

भाजपा का अनूठा उत्सव, नमो वन में किया पौधरोपण

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार के 12 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में मनाया उत्सव

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार के लगातार 12 वर्ष का गौरवशाली कार्यकाल पूर्ण होने के उपलक्ष्य में शनिवार को भिवानी में वन विभाग द्वारा एक विशेष और पर्यावरण-अनुकूल उत्सव मनाया गया। इस ऐतिहासिक अवसर को यादगार बनाने के लिए डीएफओ राजेश वत्स व भाजपा जिला अध्यक्ष वीरेंद्र कौशिक के नेतृत्व में नमो वन में पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान बड़ी संख्या में लोगों ने पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण का सामूहिक संकल्प लिया।

इस मौके पर भाजपा जिला अध्यक्ष वीरेंद्र कौशिक ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विजन की जमकर सराहना की। उन्होंने कहा कि यह 12 वर्ष भारत के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज होने वाले हैं। कौशिक ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व में देश ने विकास, जनकल्याण और सुशासन के क्षेत्र में अभूतपूर्व और ऐतिहासिक उपलब्धियां हासिल की हैं। आज भारत ने वैश्विक पटल पर अपनी एक नई और शक्तिशाली पहचान स्थापित की है।

अंत्योदय की भावना के साथ समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास का लाभ पहुंचाना मोदी सरकार की सबसे बड़ी ताकत रही है। इन सफल 12 वर्षों के पूरे होने की खुशी को हम प्रकृति की सेवा करके मना रहे हैं।

भिवानी। नमो वन में पौधारोपण करते हुए। फोटो : हरिभूमि

पौधे लगाकर उनकी देखभाल भी करें

वीरेंद्र कौशिक ने पर्यावरण संकट पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए इसे आज के दौर की सबसे बड़ी चुनौती बताया। उन्होंने कहा कि केवल सरकार के प्रयासों से पर्यावरण नहीं बचेगा, बल्कि इसके लिए जन-भागीदारी बेहद जरूरी है। उन्होंने कहा कि पर्यावरण संरक्षण अब केवल एक विचार नहीं, बल्कि हम सबकी वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता बन चुका है। ग्लोबल वार्मिंग और मौसम के बदलते चक्र को देखते हुए प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह अपने जीवन में अधिक से अधिक पौधे लगाए। सिर्फ पौधा लगाना ही काफी नहीं है, बल्कि एक संतान की तरह उसकी पूरी देखभाल करना भी जरूरी है। इस अवसर पर भाजपा पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष विक्रम सिंह, कार्यक्रम के संयोजक विशालजीत सिंह व अन्य पदाधिकारी व कार्यकर्ता भी मौजूद रहे।

उर्वरकों के उपयोग और डीएपी के विकल्पों के बारे में किया जागरूक

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा खरीफ सीजन 2026 के दौरान उर्वरकों के संतुलित एवं वैज्ञानिक उपयोग तथा डीएपी के विकल्पों के प्रचार-प्रसार को लेकर स्थानीय नई अनाज मंडी में जिले के निजी उर्वरक विक्रेताओं, पैक्स प्रबंधकों और हैफेड प्रतिनिधियों की बैठक उप निदेशक कृषि डॉ. विनोद कुमार फोगाट की अध्यक्षता में आयोजित हुई।

- नई अनाज मंडी में कृषि विभाग ने किया कार्यक्रम

डॉ. विनोद कुमार फोगाट ने कहा कि हरियाणा सरकार किसानों को उर्वरकों के संतुलित एवं वैज्ञानिक उपयोग के प्रति जागरूक करने के लिए विशेष अभियान चला रही है। उन्होंने किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड की सिफारिशों के अनुसार उर्वरकों का प्रयोग करने तथा डीएपी पर अत्यधिक निर्भरता कम करते हुए एसएसपी, विभिन्न एनपीके ग्रेड, नैनो डीएपी एवं नैनो यूरिया जैसे वैकल्पिक उर्वरकों को अपनाने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि संतुलित पोषण प्रबंधन से उत्पादन लागत कम होगी तथा भूमि की उर्वरता और उत्पादकता लंबे समय तक बनी रहेगी। बैठक में विषय विशेषज्ञ (टी एंड आई) डॉ. सुमित भारद्वाज ने समेकित पोषक तत्व प्रबंधन के महत्व पर विस्तार से जानकारी दी। नसीब सिंह ने किसानों को भूमि परीक्षण आधारित खेती अपनाने तथा जैविक एवं रासायनिक उर्वरकों के संतुलित उपयोग के लिए प्रेरित किया।

भिवानी। निजी उर्वरक विक्रेता, पैक्स प्रबंधक व हैफेड प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

अग्रसेन भवन का जल्द होगा लोकार्पण: रामदेव

भिवानी। अग्रसेन ट्रस्ट एक सामाजिक संगठन है। और इसमें अच्छे लोग शामिल हैं यह बात श्री अग्रसेन ट्रस्ट के अध्यक्ष रामदेव तायल ने सेक्टर 13 में एक विचार गोष्ठी में कहीं। उन्होंने बताया कि वर्तमान में ट्रस्ट द्वारा रोहतक रोड पर भव्य अग्रसेन भवन का निर्माण जोर-शोर से चल रहा है और बहुत जल्द इसका लोकार्पण किया जाएगा । उन्होंने कहा कि ट्रस्ट में छोटी काशी के ही नहीं बल्कि देश भर के अग्रवाल समाज के लोगों ने भरपूर स्नेह और सहयोग दिया है । ट्रस्ट के सचिव सुरेंद्र जैन एडवोकेट में कहा कि भवन निर्माण पूर्ण होने के बाद ट्रस्ट द्वारा समाज सेवा के अनेक प्रोजेक्ट शुरू किए जाएंगे जिससे आम जन को लाभ पहुंचेगा। ट्रस्ट के अध्यक्ष रामदेव तायल एवं सचिव सुरेंद्र जैन एडवोकेट ने लेघा के पूर्व सरपंच रमेश बंसल को ट्रस्ट का ट्रस्टी बनाया । इसके लिए बंसल ने ट्रस्ट के पदाधिकारियों का आभार जताया और कहा कि वह ट्रस्ट की हर गतिविधि में सक्रिय रूप से भाग लेंगे । इस अवसर पर सुभाष जैन, नरेश बंसल ,संजय गोयल, शकुंतला बंसल ,मोहित बंसल, सारिका जैन ,रुचि केडिया ,प्रेरणा बंसल , आन्या , रायना,पर्व और राध्या सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।

जैन समाज ने नवनियुक्त चेयरमैन रामकिशन का किया अभिनंदन

चरखी दादरी। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व जिलाध्यक्ष एडवोकेट रामकिशन शर्मा को हरियाणा स्टेट वेयर हाउसिंग कॉरपोरेशन के चेयरमैन बनने पर जैन समाज का प्रतिनिधिमंडल उनके निवास स्थान पहुंचकर बधाई दी। जैन संस्थाओं के प्रधान आईसी जैन व प्रधान इंद्र जैन ने एडवोकेट रामकिशन शर्मा को चेयरमैन के प्रतिष्ठित पद पर आसीन होने पर हार्दिक बधाई दी। यह हमारे दादरी क्षेत्र के लिए बहुत ही गर्व की बात है हमें पूर्ण विश्वास है कि आपके दूरदर्शी नेतृत्व, उत्कृष्ट मार्गदर्शन व अनुभव से हरियाणा स्टेट वेयर हाउसिंग कॉरपोरेशन नई ऊंचाइयों को छुएगा, आपका यह मुकाम आपकी लग्न एवं योग्यता का सही परिणाम है। हमें आपकी इस उपलब्धि पर बेहद गर्व है अध्यक्ष रामकिशन शर्मा ने उपस्थित सभी लोगों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर मुकेश जैन, राजीव जैन, अभय जैन, कृष्ण कुमार शर्मा, धर्मवीर सैनी व हीरालाल आदि उपस्थित थे।

बवानीखेड़ा में बंदर पकड़ो अभियान शुरू बढ़ती तादाद पर काबू पाने की पहल

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बवानीखेड़ा

बवानीखेड़ा शहर में बढ़ती बंदरों की संख्या से लोगों को हो रही परेशानी को देखते हुए नगर पालिका द्वारा बंदर पकड़ो अभियान शुरू कर दिया गया है। अभियान के तहत विशेष टीम की मदद से शहर के विभिन्न क्षेत्रों में बंदरों को पकड़कर सुरक्षित स्थानों पर छोड़ा जाएगा।

नगर पालिका चेयरमैन सुंदर अत्री ने बताया कि पिछले कुछ समय से शहर में बंदरों की संख्या लगातार बढ़ रही है। बंदरों द्वारा लोगों पर झपटने, घरों की छतों पर उत्पात मचाने तथा दुकानों और मकानों में घुसकर सामान नुकसान पहुंचाने की शिकायतें लगातार मिल रही थीं। इन शिकायतों को गंभीरता से लेते हुए नगर पालिका ने बंदर पकड़ो अभियान शुरू करने का निर्णय लिया है। उन्होंने कहा कि अभियान के दौरान विशेषज्ञ टीम की सहायता से बंदरों को मानवीय तरीके से पकड़ा जाएगा, ताकि किसी भी पशु को नुकसान न पहुंचे। पकड़े गए बंदरों को वन विभाग के दिशा-निर्देशों के अनुसार सुरक्षित स्थानों पर छोड़ा जाएगा। चेयरमैन ने बताया कि नगर पालिका का उद्देश्य शहरवासियों को बंदरों के आतंक से राहत दिलाना है।

- लोगों पर झपटने छतों पर उत्पात मचाने तथा दुकानों और मकानों में घुसकर सामान नुकसान पहुंचाने की लगातार मिल रही थीं शिकायतें

भिवानी में बिजली पेंशनर्स मनाएंगे योग दिवस

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

- बालसेवा आश्रम में जुटेंगे वरिष्ठ नागरिक, सर्वसम्मति से लिया निर्णय

हरियाणा बिजली पेंशनर्स वेलफेयर एसोसिएशन की बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि आगामी 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को बालसेवा आश्रम में प्रातः साढ़े छह बजे से साढ़े सात बजे तक पूरे उत्साह एवं उल्लास के साथ मनाया जाएगा।

स्वास्थ्य और मानसिक शांति का संदेश देने के लिए एसोसिएशन विशेष योग शिविर का आयोजन करने जा रही है। एसोसिएशन के प्रधान बालमुकंद बापोड़ा व महासचिव आरके चावला ने बताया कि सभी बिजली पेंशनर्स बालसेवा आश्रम में एकत्रित होंगे।

ये रहे उपस्थित

मीटिंग में हरियाणा बिजली पेंशनर्स वेलफेयर एसोसिएशन के राज्य इकाई के डिप्टी ऑर्गेनाइजर व भिवानी पर्यावरण शुद्धिकरण समिति के संयोजक केके वर्मा, पतंजलि योग समिति के तीन जिलों के प्रभारी सुरेंद्र पाल, वेदप्रिय आर्य प्रधान बालसेवा आश्रम, सेंटर फॉर साइट के रुद्रांक, दीपकसिंह, रामअवतार शर्मा, फतेह सिंह, रामेश्वर गोलागढ़, ओमपाल सिंह, कुलदीप आर्य, लोकराम रामेश्वर गोलागढ, सुरेश नागपाल, कपूरसिंह ग्रेवाल व रमेश चांगिया आदि ने भाग लिया।

सरकार का भिवानी में संत कबीर जयंती मनाना गर्व की बात: हंसराज

भिवानी। संत कबीर साहेब की 629वीं जयंती पर 29 जून भिवानी में होने वाले राज्य स्तरीय कार्यक्रम को लेकर सन्त कबीर वेलफेयर सोसायटी धानक धर्मशाला हालुवास गेट की कार्यकारिणी सदस्य एवं पूर्व पार्षद हंसराज खनगवाल की अध्यक्षता में जनसंपर्क अभियान के तहत बैठक का आयोजन किया। पूर्व पार्षद हंसराज खनगवाल ने उपस्थितजनों को जयंती समारोह का न्यौता दिया और बताया कि ये हमारे लिए बड़े ही गर्व की बात है कि 29 जून को सरकार द्वारा भिवानी में संत कबीर साहेब की जयंती राज्य स्तर पर मनाई जा रही है। खनगवाल ने बताया कि जयंती समारोह में मुख्यतिथि के रूप में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी शिरकत करेंगे। उन्होंने बताया कि जयंती समारोह के दौरान धानक समाज द्वारा मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी का अभिनंदन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि संत कबीर साहेब जयंती को लेकर लोगों में भारी उत्साह देखने को मिल रहा है। इस मौके पर नवीन पचेरवाल, पवन, दिनेश, अमन, सुनील, जयपाल, हरजीत, बिल्लू, सुरज, कृष्ण, रामचन्द्र, राजेश, मनोज, धर्मसिंह, दिपक, संतलाल, अजीत, ज्योति, कमलेश, नेहा, सीमा, रामरती, अंजली, ऊषा, गुंजन, नेहा, विक्रम, प्रति, सुरज, अमित, जिलेसिंह, आकाश, बजरंगलाल, दीपक उपस्थित रहे।

भक्ति और श्रद्धा के रंग में डूबी छोटी काशी

भगवान बाल कृष्ण की लीलाएं सिखाती हैं प्रेम : महंत चरणदास

- प्रजापति धर्मशाला में श्रीमद्भागवत कथा के वामन अवतार प्रसंग पर झूमे श्रद्धालु

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

हनुमान गेट स्थित कुम्हारों का मोहल्ला की प्रजापति धर्मशाला इन दिनों अध्यात्म और भक्ति के सागर में सराबोर है। श्री दक्ष प्रजापति सेवा समिति भिवानी द्वारा आयोजित श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान सप्ताह यज्ञ में श्रद्धालुओं में अभूतपूर्व उत्साह और गहरी आस्था देखी जा रही है। इस समागम में हनुमान जोहड़ी मंदिर के पूजनीय महंत बालयोगी चरणदास महाराज का दिव्य सान्निध्य श्रद्धालुओं हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत गौरी ठेकेदार द्वारा परंपरागत रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर की गई। समिति के पदाधिकारी मनीष प्रजापति ने बताया कि इस धार्मिक यज्ञ को सफल बनाने के लिए समूचा प्रजापति समाज और क्षेत्र के श्रद्धालु पूरी निष्ठा से जुटे हुए हैं। कथा के दौरान व्यासपीठ पर विराजमान कथाव्यास पंडित ब्रिज मोहन कौशिक ने भगवान वामन अवतार और दानवीर राजा बलि के प्रसंग का अत्यंत सजीव व मार्मिक वर्णन किया। कथा श्रवण करने पहुंचे सैकड़ों श्रद्धालुओं को अध्यात्म का मर्म समझाते हुए कथाव्यास ने एक अत्यंत प्रेरणादायक संदेश दिया। भगवान बाल कृष्ण की पावन लीलाएं केवल श्रवण करने के लिए नहीं, बल्कि जीवन में उतारने के लिए हैं। उनकी लीलाएं हमें निश्छल प्रेम और परम वैराग्य की अमर शिक्षा देती हैं। जब मनुष्य के भीतर से मैं और मेरा का अहंकार समाप्त हो जाता है, तभी उसे साक्षात नारायण के दर्शन होते हैं। राजा बलि का प्रसंग हमें सिखाता है कि सर्वस्व दान कर देने के बाद भी यदि ईश्वर के प्रति समर्पण का भाव सच्चा हो, तो भगवान स्वयं भक्त के द्वारपाल बन जाते हैं।

भिवानी। आयोजित मदभागवत कथा के दौरान कथा करते हुए। फोटो : हरिभूमि

श्रीमद्भागवत कथा मनुष्य को शांति प्रदान करती है

इस मौके पर बालयोगी महंत चरणदास ने कहा कि आज के आधुनिक और भागदौड़ भरे युग में श्रीमद्भागवत कथा मनुष्य के अशांत मन को शांति प्रदान करने वाली दिव्य औषधि है। यह कथा केवल सात दिनों का अनुष्ठान नहीं, बल्कि मानव जीवन को सही दिशा दिखाने वाला दिव्य मार्गदर्शक है। वामन अवतार के प्रसंग के दौरान जैसे ही भगवान वामन के स्वरूप की झांकी प्रस्तुत की गई, पूरा पाण्डाल जय कन्हैया लाल की और हरे कृष्णा के जयकारों से गुंजायमान हो उठा। समिति के सदस्यों ने बताया कि आगामी 16 जून तक प्रतिदिन कथा के अलग-अलग प्रसंगों व भगवान के विभिन्न अवतारों का वर्णन किया जाएगा। इस अवसर पर अनेक श्रद्धालुगण मौजूद रहे।

खेड़ी दौलतपुर में विधायक कपूर वाल्मीकि ने किया पौधरोपण

बवानीखेडा। बवानीखेड़ा क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले गांव खेड़ी दौलतपुर में विधायक कपूर वाल्मीकि ने पौधारोपण अभियान के अंतर्गत पौधा रोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। इस अवसर पर वन विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारीगण तथा बड़ी संख्या में ग्रामवासी उपस्थित रहे। सभी ने मिलकर अधिक से अधिक वृक्ष लगाने और उनके संरक्षण का संकल्प लिया। विधायक कपूर वाल्मीकि ने बताया कि वृक्ष हमारे जीवन का आधार हैं। वे न केवल हमें शुद्ध वायु प्रदान करते हैं, बल्कि पर्यावरण संतुलन बनाए रखने, जल संरक्षण करने तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित भविष्य सुनिश्चित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए हमें समय समय पर पौधारोपण करके पर्यावरण को सुरक्षित रखने की अलख जगानी चाहिए।

पेड़ गिरने से यातायात बाधित रहा तथा बिजली के पोल टूटने से घंटों बत्ती रही गुल

अंधड़ और बारिश से लुढ़क गया पारा उमस से राहत-गर्मी से मिला छुटकारा

करीब आधे घंटे तक जमकर पानी बरसता रहा

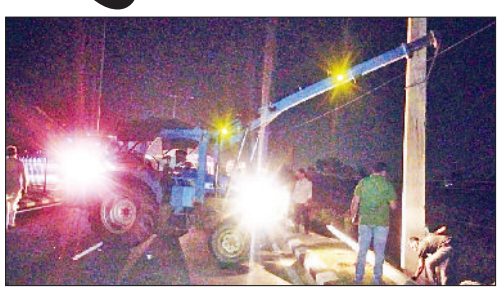

भिवानी। बिजली के तारों पर गिरे पेड़ का दृश्य, सड़क पर गिरा पेड़ तथा रात को अंधेड से टूटे पोल को बदलते हुए। फोटो : हरिभूमि

- शहर की बाहरी कॉलोनियों में करीब 15 घंटे तक बिजली की सप्लाई बाधित रही

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

बीती रात तेज अधंड के साथ आई बारिश से सात डिग्री सेल्सियस पारा लुढ़क गया। पारा लुढकने से लोगों को गर्मी से राहत तो मिली,लेकिन तेज अंधड़ से पेड़ गिरने से रास्ते अवरूद्ध तथा बिजली के पोल टूटने से अनेक जगहों पर कई कई घंटे बिजली के दर्शन नहीं हुए। हालांकि निगम के कर्मचारी टूटे हुए पोल को दुरुस्त करने में जुटे है,लेकिन शहर की बाहरी कॉलोनियों में करीब 15 घंटे तक बिजली की सप्लाई बाधित रही। बिजली की सप्लाई न आने से अनेक घरों में पानी की सप्लाई नहीं पहुंची। जिससे लोगों को बिजली व पानी के लिए दर दर भटकना पड़ा।

देर रात अचानक आसमान में काले बादल उमड़ कर एकत्रित हो गए। तेज अंधड़ के साथ आसमान से पानी बरसने लगा। करीब आधे घंटे तक जमकर पानी बरसता रहा। उसके बाद तेज अंधड़ की गति पर ब्रेक लगा,पर हलकी बारिश होती रही। बारिश के चलते पारा 43 डिग्री सेल्सियस से लूढक कर 36 डिग्री सेल्सियस पर आ गया। लोगों को गर्मी से राहत मिल गई। क्योंकि पिछले कई दिनों से लोग गर्मी से बेहाल थे। हलकी बूंदाबांदी से पारा थोडा सा नरम हुआ था,लेकिन उमस ने लोगों का जीना मुहाल कर दिया था। पर बीती रात आई तेज बारिश ने लोगों को गर्मी से निजात दिला दी। दूसरी तरफ बारिश के साथ आई तेज अंधड़ की वजह से शहर के बाहरी इलाके में अनेक जगहों पर बिजली के पोल टूट गए। जिससे वहां पर बिजली की सप्लाई बाधित हुई। शहर के बाहरी इलाकों में बिजली निगम की टीम ने रात को ही कार्य करना आरंभ कर दिया था,लेकिन शनिवार दोपहर तक शहर के बाहरी इलाकों में बिजली की सप्लाई चालू नहीं हो पाई थी। पूरी रात बाहरी कॉलोनी के लोगों बिना बिजली के ही गुजारनी पड़ी। इस दौरान पूरी रात उपभोक्ताओं के फोन घनघनाते रहे। शहर के साथ लगते गांव पालूवास, हरिपुर व औद्योगिक क्षेत्र में शनिवार तीन बजे तक बिजली की सप्लाई चालू नहीं हो पाई थी। अंदरूनी शहर में भी बिजली के बार-बार कट लग रहे थे। जिससे लोगों को दिन भर परेशानी झेलनी पड़ी।

जेसीबी की मदद से पेड़ों को हटाया

देर रात तेज अंधड़ से अनेक जगहों पर हरे पेड़ गिर गए। जिस वजह से रास्ता अवरूद्ध हो गए। कई घंटों तक लोगों को आवाजाही में परेशानी उठानी पडी। शहर व उसके आसपास कई जगहों पर पेड़ गिरे रहे। कई जगहों पर रात को ही जेसीबी की मदद से पेड़ों को हटाया गया। दूसरी तरफ घरों की छतों पर लगी टिन व सोलर की प्लेटे भी उड़कर दूर जा गिरी।

कहीं पेड़ टूटे कहीं पोल धराशायी, किसानों को चार दिन से भी बिजली के दर्शन नहीं

बाढड़ा। चार दिन पहले आई आंधी तुफान ने बाढड़ा क्षेत्र में जो जमकर कहर बरपाया था उससे कृषि क्षेत्र में बिजली आपूर्ति सिस्टम अब तक दुरुस्त नहीं हो पाया है। जिससे टूटे पेड़ों व बिजली आपूर्ति के गिरे पोल अब तक दुरुस्त नहीं हो पाए हैं वहीं ग्रामीण क्षेत्र के बिजली आपूर्ति फीडरों के दर्जन भर खंभे लाईन समेत टूट गए वहीं सडक़मार्गों, नहरों समेत अलग अलग जगहों पर हजारों पेड़ टूट गए हैं। लगातार चल रही तेज आंधी से बिजली विभाग ने अनहोनी की आशंका के चलते अधिकतर फीडरों पर सारी रात्रि आपूर्ति बंद रखी तथा सुबह जाकर उपभोक्ताओं को बिजली नसीब हो पाई। कई गांवों में किसानों के पशुघरों को भी नुकसान पहुंचा है। बाढड़ा उपमंडल क्षेत्र में लगातार चार दिन से मौसम में परिवर्तन होने से अचानक ही तेज गर्म हवाओं के साथ ही मौसम ने पूरी तरह करवट ले ही ली। चार दिन पहले देखते ही देखते तेज अधंड़ से बड़े बड़े पेड़ टूटकर गिरे थे वहीं फीडरों की आपूर्ति लाईनें व रेतीले टिल्लों पर संचालित बिजली आपूर्ति के खंभे जमी पर गिरे थे जो आज तक भी पूरी तरह दुरुस्त नहीं हो पाए हैं। धूलभरी मिट्टी के साथ आई हवाओं ने लोगों को घरों से निकलना दुभर कर दिया वहीं खेतों व नैशनल हाईवे व छोड़ बड़े सडक़मार्गो, नहरों के किनारों समेत अलग अलग जगहों पर हजारों पेड़ अभी तक गिरे हुए हैं वहीं कृषि क्षेत्र के ट्यूबवैलों पर अब तक बिजली आपूर्ति पूरी तरह बहाल नहीं हो पाई है। ग्रामीण रविंद्र भांडवा, शंकर शर्मा, दीपक श्योराण, सुनील पिलानियां, विकास, बलजीत जांगड़ा इत्यादि ने बताया कि मंगलवार को तेज हवाओं के साथ आई बरसात व अब लगातार व चार दिनों से बिना बरसात आई तेज आंधी ने आमजन का जीना मुहाल कर दिया वहीं पेड़ पौधों को बर्बाद करते हुए बिजली संकट भी पैदा कर दिया। चार दिन से लगातार देर रात्रि को क्षेत्र में चली तेज आंधी से लोगों के मकानों पर रखी पानी की टंकी, सोलर प्लेंट व इंटरनेट केबल सुविधाएं हवा में उड़ती नजर आई। इससे आमजन को लाखों रुपयों का नुकसान झेलना पड़ा। लोगों ने बताया कि उन्होंने अपने कार्यालय व घर पर सोलर की बड़ी क्षमता की प्लेटें संचालित कर रखी थी लेकिन तंज अंधड़ से वह सारी उड़ गई और उनको गहरी चपत लगी।

भांडवा गांव में आंधी से छत पर टूटी पड़ी सीमेंट की चादर।

भिवानी। रक्तदाताओं को बैज लगाकर सम्मानित करते हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के चेयरमैन शंकरलाल धूपड़। फोटो : हरिभूमि

विश्व रक्तदाता दिवस पर 41 युवकों ने किया रक्तदान

- रक्तदान का छोटा सा प्रयास मरते इंसान को दे सकता है जिंदगी की नई उम्मीद : धूपड़

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

हर बूंद मायने रखती है, हर रक्तदाता अनमोल है, के मूल मंत्र को चरितार्थ करते हुए शनिवार को चौधरी बंसीलाल नागरिक अस्पताल में रक्तदान शिविर का आयोजन सहारा चैरिटेबल ट्रस्ट एवं वंशिका फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में किया। इस दौरान शिविर में बतौर मुख्यतिथि हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के चेयरमैन शंकरलाल धूपड़ ने शिरकत की और रक्तदाताओं को बैज लगाकर सम्मानित किया। शिविर का आयोजन ब्लड बैंक इंचार्ज डॉ. हर्ष व शतकवीर रक्तदाता राजेश डुडेजा की देखरेख में किया। इस मौके पर धूपड़ ने 41 लोगों ने रक्तदान किया।

इस मौके पर सहारा चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष जगदीश मिताथल, रक्तवीर मनीष वर्मा व शतकवीर रक्तदाता राजेश डुडेजा ने कहा कि एक छोटा सा कदम, किसी के लिए बड़ी उम्मीद बन सकता है। उन्होंने युवाओं और समाज के हर वर्ग से नियमित रूप से रक्तदान करने की अपील की ताकि अस्पतालों में रक्त की कमी से किसी की जान न जाए। उन्होंने कहा कि रक्तदान शिविर जैसे मानवीय सेवा के कार्य बहुत ही सराहनीय होते है।

रक्तदान करना ना केवल किसी जरूरतमंद मरीज का जीवन बचा सकता है, बल्कि स्वयं के स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाने का तरीका है, ऐसे में प्रत्येक व्यक्ति को समय-समय पर रक्तदान करते रहना चाहिए।

रक्तदान से बड़ा कोई दान नहीं : धूपड़

शिविर का शुभारंभ करने के उपरांत रक्तदाताओं का हौसला बढ़ाते हुए मुख्यतिथि चेयरमैन शंकरलाल धूपड़ ने कहा कि रक्तदान से बड़ा कोई दान नहीं है, क्योंकि आपका यह छोटा सा प्रयास किसी मरते हुए इंसान को जिंदगी की नई उम्मीद दे सकता है। इस तरह के मानवीय कैंप का आयोजन सराहनीय है।

आस्था स्पेशल स्कूल में दरियाव सिंह ढिल्लो को किया नमन, दी श्रद्धांजलि

भिवानी। आस्था स्पेशल स्कूल में श्रद्धा एवं सम्मान के साथ दरियाव सिंह ढिल्लो की चतुर्थ पुण्यतिथि मनाई। इस अवसर पर दिव्यांग बच्चों द्वारा भजन-संध्या एवं श्रद्धांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें सभी ने उनकी पुण्य स्मृतियों को नमन कर श्रद्धासुमन अर्पित किए। कार्यक्रम में मुख्य रूप से स्वर्गीय दरियाव सिंह ढिल्लो के सुपुत्र एवं प्रख्यात समाजसेवी डॉ. धर्मवीर ढिल्लो उपस्थित रहे। उन्होंने अपने पूज्य पिता के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी तथा दिव्यांग बच्चों का आशीर्वाद प्राप्त किया। संस्था के संस्थापक विजय शर्मा ने कहा कि चौधरी दरियाव सिंह ढिल्लो का स्नेह, मार्गदर्शन और संरक्षण सदैव उनके परिवार को प्राप्त होता रहा है। उन्होंने कहा कि उनके और ढिल्लो परिवार के बीच का संबंध केवल सामाजिक नहीं, बल्कि पिता-पुत्र जैसे आत्मीय रिश्ते का रहा है। उन्होंने कहा कि स्वर्गीय ढिल्लो की प्रेरणा और उनके परिवार का सहयोग आस्था स्पेशल स्कूल के लिए सदैव संबल रहा है।

जिले में सात केंद्रों पर होगी नीट परीक्षा

- डीसी साहिल गुप्ता ने डीआरडीए हॉल में शिक्षा अधिकारियों को दिए जरूरी निर्देश

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

जिले में 21 जून को आयोजित होने वाली नीट परीक्षा को सुचारू एवं पारदर्शी ढंग से सम्पन्न कराने को लेकर डीसी साहिल गुप्ता की अध्यक्षता में लघु सचिवालय स्थित डीआरडीए सभागार में विभिन्न विभागों के अधिकारियों की एक बैठक आयोजित हुई। बैठक में डीसी ने सभी परीक्षा केंद्र अधीक्षकों को निर्देश दिए कि नीट परीक्षा केंद्रों में अनाधिकृत व्यक्ति किसी भी कीमत पर प्रवेश नहीं होना चाहिए। परीक्षा केंद्र के अंदर केवल परीक्षार्थी और परीक्षा केंद्र पर नियुक्त स्टाफ सदस्य ही आएंगे। नीट के परीक्षा केंद्रों पर पेयजल व बिजली व्यवस्था सुनिश्चित करें।

वहीं दूसरी ओर मुख्य सचिव अनुराग रस्तोगी ने भी वीसी के माध्यम से प्रदेशभर के जिलाधिकारियों को नीट परीक्षा के पारदर्शी और निष्पक्ष ढंग से आयोजन को लेकर निर्देश दिए। परीक्षा के चलते साइबर सेल की सोशल मीडिया पर विशेष निगरानी रहेगी। केंद्रीय विद्यालय पालुवास के प्राचार्य एवं परीक्षा सिटी कॉर्डिनेटर मोहिंद्रपाल ने बताया कि नीट की परीक्षा के लिए शहर व आसपास क्षेत्र में विभिन्न स्थानों पर सात परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं, जिनमें 3846 बच्चे परीक्षा देंगे। उन्होंने बताया कि चौधरी बंसीलाल विवि परीक्षा केंद्र में 672, राजकीय मॉडल संस्कृति वमावि में 654, पीएमश्री राजकीय कन्या वमावि में 624, एमएनएस राजकीय कॉलेज में 528, पीएमश्री केंद्रीय विद्यालय पालुवास में 480, राजीव गांधी महिला कॉलेज में 480 और सर्वपल्ली राधाकृष्णन लैब स्कूल, शिक्षा बोर्ड में 408 परीक्षार्थी नीट की परीक्षा देंगे। परीक्षा का समय दोपहर बाद दो बजे से शाम 5.15 बजे तक का है। परीक्षा केंद्र पर परीक्षार्थियों का प्रवेश 11 बजे से दोपहर 1.30 बजे तक होगा। इस दौरान सीटीएम अनिल कुमार, डीएमसी हरबीर सिंह, जीएम रोडवेज दीपक कुंडू सहित संबंधित विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

खबर संक्षेप

मीना परमार को हरियाणा महिला आयोग की उपाध्यक्ष बनाने पर जताई खुशी

तोशाम। हरियाणा महिला आयोग की उपाध्यक्ष नियुक्त होने पर मीना परमार को भाजपा बापोड़ा मंडल के अध्यक्ष जगत कौशिक ने मंडल के गणमान्य व्यक्तियों, सामाजिक संगठनों एवं नागरिकों ने हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। मंडल अध्यक्ष जगत कौशिक ने कहा कि मीना परमार के नेतृत्व और अनुभव से हरियाणा में महिलाओं के अधिकारों की रक्षा, उनके सशक्तिकरण तथा कल्याण से जुड़े कार्यों को नई दिशा मिलेगी। उनकी नियुक्ति महिलाओं के हितों को और अधिक मजबूती प्रदान करेगी ओर उनके सफल कार्यकाल की कामना करते हुए विश्वास व्यक्त किया कि वे महिला सुरक्षा, सम्मान एवं उत्थान के लिए प्रभावी कार्य करेंगी। इस अवसर पर जिला कार्यकारिणी सदस्य इमरान बापोड़ा, पूर्व मंडल अध्यक्ष मुनिपाल मास्टर व अजीत शेखावत आदि मौजूद रहे।

आभूषण और नकदी चोरी करने के मामले में छठा आरोपी गिरफ्तार

भिवानी। पुलिस की सीआईए स्टाफ-2 भिवानी ने उक्त मामले में छठे आरोपी को गिरफ्तार किया है। नवदीप निवासी फ्रेंड्स कॉलोनी, भिवानी हाल निवासी रोहतक ने थाना शहर भिवानी में शिकायत दर्ज करवाई थी। शिकायतकर्ता ने बताया कि उनका गली नंबर-6, भिवानी स्थित मकान लंबे समय से बंद पड़ा था। उन्हें फोन के माध्यम से सूचना मिली कि उनके मकान के ताले टूटे हुए हैं। सूचना मिलने पर जब वे मौके पर पहुंचे तो देखा कि मकान के ताले टूटे हुए थे तथा घर के अंदर रखे आभूषण और नकदी चोरी हो चुकी थी। शिकायत के आधार पर थाना शहर भिवानी में संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू की गई। सीआईए स्टाफ-2 भिवानी के मुख्य सिपाही ओमप्रकाश ने माननीय न्यायालय से प्रोडक्शन वारंट हासिल कर मामले में शामिल छठे आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की। गिरफ्तार आरोपी की पहचान सुनील पुत्र पाथा निवासी माहतोगढ़ जिला अशोकनगर मध्य प्रदेश के रूप में हुई है।

हम सब शांति के सागर परमपिता परमात्मा के बच्चे : बीके रजनी

भिवानी। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय दिव्य भवन रूद्रा कॉलोनी में पीस इज माय नेचर प्रोजेक्ट के अंतर्गत आध्यात्मिक कार्यक्रम का आयोजन किया। सभा को संबोधित करते हुए बीके रजनी ने कहा कि भले ही चारों ओर अशांति का माहौल है, हमारे मन के भीतर भी हलचल है, संबंधों में भी टकराव है। इसी के चलते हर आत्मा शांति की गहरी खोज में है, जाने अनजाने में हर कोई शांति को ढूंढ रहा है कि कुछ पल की शांति मुझे मिल जाए। उन्होंने कहा कि हर आत्मा ये भूल चुकी है कि शांति तो उसका स्वधर्म है, क्योंकि हम सब शांति के सागर परमपिता परमात्मा के बच्चे हैं, हम भी मास्टर शांति के सागर है, माना हम हर आत्मा शांति के मालिक है, शांति हमारे भीतर ही है। बस आवश्यकता है तो कुछ क्षण रूककर उसे समझने की, अपनाने की, अनुभव करने की। कार्यक्रम के दौरान कुछ आध्यात्मिक गतिविधियों और राजयोग के अभ्यास से सभी ने गहन सुकून भरी शांति का अनुभव भी करवाया। इस अवसर पर मीडिया प्रभारी बीके सुभाष गोयल, सुरेन्द्र बागला, रजनी बागला, बीके संदीप, बीके शीला, कलावती, संतोष, अंजु, वशिष्ट, बीके नीलम सहित अनेक बीके भाई बहन व सैंकड़ों की संख्या में लोग मौजूद रहे।

विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति, अनुशासन तथा भविष्य की तैयारी को लेकर की विस्तृत चर्चा

चरखी दादरी। शिक्षा क्षेत्र में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास एवं बेहतर शैक्षणिक वातावरण सुनिश्चित करने के उद्देश्य से गुरुकृपा कोचिंग अकादमी में प्रभावशाली अभिभावक-शिक्षक बैठक हुई। बैठक में विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति, अनुशासन, परीक्षा परिणामों तथा भविष्य की तैयारी को लेकर विस्तृत चर्चा की। अकादमी की संस्थापक एवं ओनर पूजा राजेंद्र ठाकरायण तथा निदेशक बालकिशन शर्मा के नेतृत्व में हुई बैठक में अभिभावकों को विद्यार्थियों के प्रदर्शन, उनकी कमजोरियों एवं उन्हें दूर करने की रणनीतियों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। बैठक के दौरान शिक्षकों ने अभिभावकों से संवाद स्थापित करते हुए विद्यार्थियों के अध्ययन व्यवहार, नियमितता, समय प्रबंधन व प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी से जुड़े महत्वपूर्ण पहलुओं पर अपने विचार सांझा किए। अभिभावकों ने अपने सुझाव एवं अनुभव प्रस्तुत किए, जिनका अकादमी प्रबंधन द्वारा गंभीरता से संज्ञान लिया। इस अवसर पर अकादमी के शिक्षक विकास, संदीप, अशोक, नरेश, राहुल, शुभम, सुमित एवं रानी आदि उपस्थित रहा।

मीना परमार की नियुक्ति से महिला सशक्तिकरण के संदेश को मिलेगा बल : विनोद चावला

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

हरियाणा सरकार द्वारा भिवानी की कर्मठ एवं समर्पित नेत्री मीना परमार को हरियाणा महिला आयोग का उपाध्यक्ष नियुक्त किए जाने पर स्थानीय कार्यकर्ताओं और आम जनता में जबरदस्त उत्साह का माहौल है। इस नियुक्ति को भाजपा द्वारा जमीनी कार्यकर्ताओं के सम्मान और महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक बड़ा और ऐतिहासिक कदम माना जा रहा है। इस अवसर पर भारतीय जनता पार्टी के जिला प्रवक्ता विनोद चावला ने नवनियुक्त उपाध्यक्ष मीना परमार को बधाई व शुभकामनाएं दीं। उन्होंने इस महत्वपूर्ण जिम्मेदारी के लिए मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल, प्रदेश अध्यक्ष डा. अर्चना गुप्ता सहित भाजपा के शीर्ष नेतृत्व का आभार व्यक्त किया। इस मौके पर भाजपा जिला प्रवक्ता विनोद चावला ने कहा कि मीना परमार की यह नियुक्ति पार्टी के महिला सशक्तिकरण के संकल्प को और अधिक मजबूती प्रदान करती है। उन्होंने कहा कि मीना परमार का हरियाणा महिला आयोग का उपाध्यक्ष बनना भाजपा के महिला सशक्तिकरण के संदेश को सीधे तौर पर बल दे रहा है। भाजपा केवल नारों में नहीं, बल्कि धरातल पर महिलाओं को नेतृत्व सौंपकर उन्हें सशक्त बनाने में विश्वास रखती है।

सिर्फ कागजों पर नहीं, धरातल पर महिलाओं को राजनीति में आगे ला रही भाजपा : ओमबीर सिंह

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

कर्मठ महिला नेत्री मीना परमार को हरियाणा महिला आयोग का उपाध्यक्ष नियुक्त किए जाने पर क्षेत्र के सामाजिक और राजनीतिक संगठनों में जबरदस्त उत्साह है। इस महत्वपूर्ण नियुक्ति पर राजपूत समाज के वरिष्ठ प्रतिनिधि और सामाजिक कार्यकर्ता ओमबीर सिंह तंवर ने मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी और भाजपा के शीर्ष नेतृत्व का विशेष रूप से आभार व्यक्त किया है। उन्होंने इस फैसले को जमीनी स्तर पर काम करने वाली महिलाओं का सम्मान बताया। ओमबीर सिंह तंवर ने मीना परमार की इस नियुक्ति को लेकर सूबे के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी और पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की। उन्होंने भारतीय जनता पार्टी की प्रदेश अध्यक्ष डा. रचना गुप्ता, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष मोहनलाल बड़ौली, सांसद धर्मबीर सिंह, भिवानी के विधायक घनश्याम सर्राफ, बवानीखेड़ा के विधायक कपूर सिंह वाल्मीकि और दादरी के विधायक सुनील सांगवान का भी धन्यवाद किया। तंवर ने कहा कि इन सभी नेताओं के दूरदर्शी नेतृत्व और जमीनी कार्यकर्ताओं पर भरोसे के कारण ही भिवानी को यह गौरव मिला है। ओमबीर सिंह तंवर ने नव-नियुक्त उपाध्यक्ष मीना परमार को सच्चे अर्थों में महिला हितैषी बताते हुए कहा कि वे लंबे समय से समाज के बीच रहकर महिलाओं की आवाज उठाती रही हैं।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन नं. : 8814999151, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2000/- रु. 2500/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
भिवानी : हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन : 8814999170, दादरी : 9253681008

भाजपा नेता पंकज कसेरा, मुकेश बंसल और अंकित तंवर ने दीं शुभकामनाएं

राज्य महिला आयोग की नवनियुक्त वाइस चेयरपर्सन मीना परमार का किया अभिनंदन

- आयोग महिलाओं की समस्याओं के समाधान, अधिकारों की रक्षा एवं न्याय दिलवाने को रहेगा तत्पर : मीना

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

भिवानी। हरियाणा राज्य महिला आयोग की नवनियुक्त उपाध्यक्ष मीना परमार का अभिनंदन करते भाजपाई। फोटो : हरिभूमि

हरियाणा राज्य महिला आयोग की नवनियुक्त उपाध्यक्ष मीना परमार को उनकी नई जिम्मेदारी मिलने पर भाजपा व्यापार प्रकोष्ठ के पूर्व प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य पंकज कसेरा, जिला सहसंयोजक मुकेश बंसल व अंकित तंवर ने उनके निवास पर पहुंचकर अभिनंदन किया एवं शुभकामनाएं दी।

उन्होंने मीना परमार को पुष्पगुच्छ और प्रभु श्रीरामलला की प्रतिमा भेंट कर सम्मान किया तथा उन्हें आयोग की उपाध्यक्ष नियुक्त किए जाने पर शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्ज्वल एवं सफल कार्यकाल की कामना की। उन्होंने कहा कि मीना परमार लंबे समय से समाज सेवा और महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभाती रही हैं।

उन्होंने कहा कि हरियाणा सरकार द्वारा मीना परमार को महिला आयोग की उपाध्यक्ष नियुक्त करना एक सराहनीय निर्णय है। उनके नेतृत्व में महिला आयोग महिलाओं की समस्याओं के समाधान, उनके अधिकारों की रक्षा तथा उन्हें न्याय दिलाने के लिए और अधिक प्रभावी ढंग से कार्य करेगा। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि मीना परमार अपने अनुभव और कार्यकुशलता के बल पर जिम्मेदारी को पूरी निष्ठा एवं समर्पण के साथ निभाएंगी। जिला सहसंयोजक मुकेश बंसल ने कहा कि वर्तमान समय में महिलाओं की सुरक्षा, सम्मान और स्वावलंबन को बढ़ावा देना अत्यंत आवश्यक है। अंकित तंवर ने भी मीना परमार को बधाई दी। परमार ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उन्हें जो जिम्मेदारी सौंपी गई है, उसका निर्वहन वे पूरी ईमानदारी, निष्ठा और प्रतिबद्धता के साथ करेंगी।

उन्होंने कहा कि महिलाओं के अधिकारों की रक्षा, उनकी समस्याओं के समाधान तथा उन्हें न्याय दिलाने के लिए महिला आयोग सदैव तत्पर रहेगा। इस अवसर पर रविंद्र बापोड़ा, राजेश साकरोड़िया व मुकेश रहेजा आदि उपस्थित थे।

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक,रविवार 14 जून 2026

रिलेशनशिप का नया ट्रेंड
डिजिटल ब्वॉयफ्रेंड-गर्लफ्रेंड

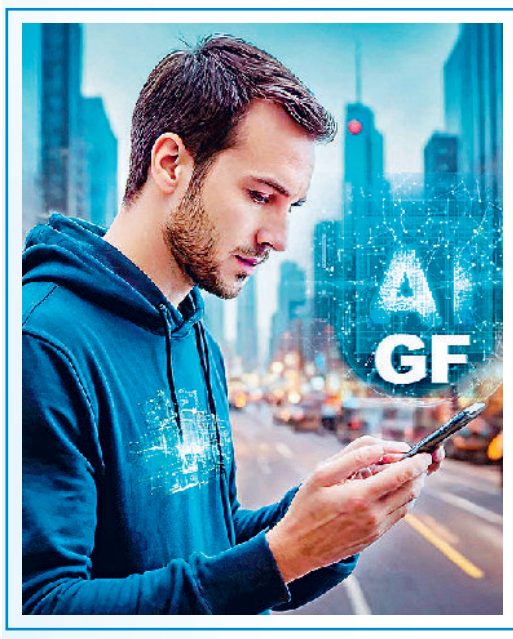

हाल के वर्षों में एआई ने अनेक प्रोफेशंस में जबर्दस्त बदलाव कर दिया है। अब प्रोफेशंस से भी आगे बढ़कर रिलेशनशिप में भी इसका दखल बढ़ने लगा है। इसका प्रमाण है, रियल के बजाय डिजिटल पार्टनर बनाने का बढ़ता ट्रेंड। यह ट्रेंड क्या है, यह क्यों बढ़ रहा है और आने वाले समय में इसके किस तरह के असर हम सभी को देखने को मिल सकते हैं, इसका डिटेल्ड एनालिसिस।

{ कवर स्टोरी / लोकमित्र गौतम }

भले ही आज यह बात आपको थोड़ा असहज कर सकती है, लेकिन यह सच है कि रिलेशनशिप का नया ट्रेंड तेजी से सामने आ रहा है, वो है डिजिटल गर्लफ्रेंड-ब्वॉयफ्रेंड। डिजिटल गर्लफ्रेंड और डिजिटल ब्वॉयफ्रेंड (जीएफ/बीएफ) कोई साधारण ट्रेंड नहीं है, बल्कि इंसानी रिश्तों के ढांचे में अभूतपूर्व बदलाव की शुरुआत है।

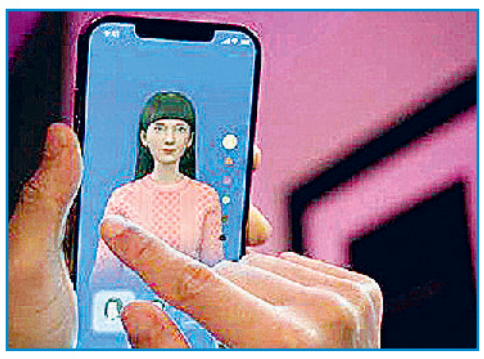

रियल पार्टनर जैसी फीलिंग

आज एआई आधारित एप्स और विभिन्न प्लेटफॉर्म जैसे रिपेलिका और करेक्टर एआई मौजूद हैं, जो यूजर के साथ उसी तरह रोमांटिक, भावनात्मक या निजी बातचीत करते हैं, जैसे ब्वॉयफ्रेंड या गर्लफ्रेंड आपस में करते हैं। ये आपकी पसंद ही नहीं भावनाओं को भी समझते हैं, आपकी बातों पर प्रतिक्रिया देते हैं और पर्सनल पार्टनर जैसा अनुभव देते हैं।

करोड़ों लोग हैं एक्टिव

डिजिटल गर्लफ्रेंड और डिजिटल ब्वॉयफ्रेंड कोई रेयर या एक्सेप्शनल फिनोमिना नहीं है। सच्चाई तो यह है कि अगर एआई कंपेनियनशिप एप्स के आंकड़ों को मानें तो इस समय दुनिया में 5 से 6 करोड़ जीएफ/बीएफ सक्रिय रूप में मौजूद हैं। पूरी दुनिया में 10 करोड़ से ज्यादा लोग ऐसे हैं, जो इनके साथ किसी न किसी रूप से चैटबॉट्स के जरिए जुड़ते हैं। इनमें सिर्फ रिपेलिका के ही 3-4 करोड़ यूजर हैं, जबकि करेक्टर एआई के 2 करोड़ सिर्फ मंथली एक्टिव यूजर हैं। सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि दुनिया के 21 फीसदी वयस्क एआई कंपेनियनशिप का इस्तेमाल कर चुके हैं और 72 फीसदी किशोर कम से कम एक बार ऐसे एआई से बातचीत की है। मतलब यह कि अब यह कुछ थोड़े से लोगों का शौक या प्रयोग भर नहीं है बल्कि यह बड़ी जनसंख्या का न्यू नॉर्मल व्यवहार है।

अपने देश में भी बढ़ रहा ट्रेंड

भारत भी इस मामले में पीछे नहीं है। हालांकि भारत के अलग से सटीक आधिकारिक आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन इसका बढ़ता ट्रेंड साफ तौर पर देखा जा सकता है। और ऐसा हो भी क्यों न, आखिर भारत दुनिया का सबसे बड़ा इंटरनेट यूजर देश है। भारत में एक अरब से ज्यादा मोबाइल फोन इस्तेमाल में हैं और इनमें 80 करोड़ से ज्यादा में इंटरनेट का इस्तेमाल होता है। अगर एआई एप्स डाउनलोड ग्रोथ 2023-24 को देखें, तो भारत में इसकी रफ्तार 1400 फीसदी रही है यानी, हाल के सालों में भारत में एआई एप्स को डाउनलोड करने की रफ्तार 14 गुना तक बढ़ी है। क्योंकि भारत में मोबाइल फोन के सबसे बड़े उपभोक्ता 18 से 30 साल के युवा हैं। इसलिए भी भारत में एआई कंपेनियनशिप की मांग अविश्वसनीय रफ्तार से बढ़ रही है। क्योंकि इंटरनेट इस्तेमाल करने वाला यही वर्ग (18-30) सबसे बड़ा इंटरनेट यूजर वर्ग है। इसके बावजूद भी यह कहा जा सकता है कि भारत में यह सिलसिला अभी शुरुआती चलन में है, भले इसकी रफ्तार बहुत तेज हो।

इस ट्रेंड के बढ़ने की वजहें

सवाल है, आखिर इंसानों को डिजिटल जीएफ और बीएफ तक जाने की जरूरत ही क्यों पड़ी? यानी हम आखिर यहां पहुंचे क्यों और कैसे? इसका सबसे बड़ा कारण है लोगों में बढ़ता अकेलापन। शहरी जीवन, काम का दबाव, टूटते सामाजिक नेटवर्क और भावनात्मक सहारा ढूंढ़ते युवा। वास्तव में यही वजहें हैं, जिनके चलते पिछले कुछ सालों में ही डिजिटल जीएफ/बीएफ की रफ्तार तेजी से बढ़ी है। असली रिश्तों में लगातार बढ़ती असहमति, समझौते और जिम्मेदारियां एआई रिश्तों की तरफ हमें मोड़ रही हैं, क्योंकि वहां इस तरह की दुश्वारियां या तो नहीं हैं या इतनी नहीं है कि परेशान करके रख दें। क्योंकि एआई रिश्ते 'कंट्रोल्ड' होते हैं और उनको संभालना आसान होता है। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह भी है कि एआई अब इस कदर एडवांस हो चुका है कि वह लोगों को 'सोचने और समझने' का भी भ्रम पैदा कर रहा है।

रियल रिलेशन होंगे वीक

इस उभरते नए डिजिटल रिलेशन को लेकर गंभीर सवाल यह है कि अगर इस सिलसिले को जल्द रोका न गया, तो क्या होगा? भले ही अभी यह ट्रेंड रोमांचित कर रहा है, लेकिन सच है कि इससे हमारे जैविक रिश्ते आने वाले दिनों में बेहद कमजोर हो सकते हैं। अगर संबंध विशेषज्ञों की मानें तो यह सिलसिला इसी तरह बेकाबू आगे बढ़ता रहा तो असली रिश्ते में दूरियां बढ़ने लगेंगी। हममें से ज्यादातर लोगों के रिश्तों के नाम एआई पार्टनर होंगे, क्योंकि एआई पार्टनर झगड़ा नहीं करते और हमेशा आपकी हां में हां मिलाते हैं। इससे असली रिश्ते जटिल लगने लगते हैं और एआई रिश्ते आकर्षक हो जाते हैं। जो लोग हर दिन एआई के साथ एक से दो घंटे के लिए संपर्क में रहते हैं, उन्हें एआई से लगाव हो जाता है। वे उसे अपने पार्टनर के रूप में स्वीकार करने लगते हैं। यह वैसा ही है, जैसे सोशल मीडिया एडिक्शन। पर, यह उससे भी एक कदम आगे का एडिक्शन है, क्योंकि इससे हमारे न सिर्फ भावनात्मक रिश्ते पर चोट लग रही है बल्कि इसके कारण हमारे समाज का सदियों से मौजूद पारंपरिक ढांचा दरकने लगा है।

मेंटल हेल्थ पर बुरा असर

डिजिटल रिलेशन का असर सिर्फ भावनात्मक रिश्तों तक ही सीमित नहीं रहता है बल्कि बढ़ते जीएफ/बीएफ ट्रेंड के कारण हमारे युवाओं के मेंटल हेल्थ पर भी गंभीर असर पड़ता है, क्योंकि शुरुआत में ये डिजिटल ब्वॉयफ्रेंड या गर्लफ्रेंड भले राहत देते हों, लेकिन जब आप लगातार इनके टच में रहते हैं या इनका इस्तेमाल करते हैं, तो ये न केवल आपको अकेलेपन के दलदल में खींच ले जाते हैं बल्कि आपको कई तरह की हताशाओं और निराशाओं से भी भर देते हैं। अकसर एआई कंपेनियनशिप के साथ जो लोग खुश होते हैं, उन्हें नजदीक के इंसानों से रिश्ते बनाने में बड़ी मुश्किल लगती है और अगर किसी तरह से इनके रिश्ते बन भी गए, तो उन्हें यह रिश्ते बहुत पसंद नहीं आते। *

बढ़ सकती हैं कई तरह की समस्याएं

डिजिटल जीएफ/बीएफ का बढ़ता ट्रेंड सचमुच में डरावना है। इससे आने वाले समय में कई समस्याएं सामने आ सकती हैं। इसके बढ़ने से शादी और परिवार की संस्था कमजोर होगी। कस्टम पार्टनर की आदत यानी हम जैसा साथी चाहते हैं या दूसरे शब्दों में अपनी कल्पना के साथी की तलाश में रहने लगेंगे। अगर यह चलन इसी तरह तेजी से बढ़ता रहा, तो देश और दुनिया में अकेले रहने वाले लोगों की संख्या बहुत ज्यादा हो जाएगी। कई विशेषज्ञों के मुताबिक तो अगले दो-तीन दशकों में अकेले रहने वाले लोग, साथ में रहने वाले लोगों से भी ज्यादा हो सकते हैं। इससे सामाजिक दूरी भी बढ़ेगी। यह ट्रेंड मानव समाज के सामने एक गंभीर चुनौती बन सकता है।

इंसानी सभ्यता की शुरुआत से ही हमेशा जवान, खूबसूरत दिखने की चाहत रही है। इसे पाने के लिए नेचुरल तरीकों से लेकर, साइंस, दवाएं और अब एआई तक का यूज किया जा रहा है। उम्मीद है कि जल्द ही खूबसूरती का कोई पर्मानेंट सॉल्यूशन हमें मिल जाएगा।

पर्मानेंट खूबसूरती की चाहत
जल्द मिल सकता है सॉल्यूशन

{ टेक्नोसाइंस / प्रतिमा अरोड़ा }

इंसानी खूबसूरती का क्या कोई स्थायी और सार्वभौमिक फार्मूला हो सकता है? 19वीं शताब्दी से ही विज्ञान इस सवाल का जवाब ढूंढ़ रहा है। आधुनिक विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी, जेनेटिक्स और कॉस्मेटिक मेडिसिन का अब लगभग यह केंद्रीय विषय बन चुका है कि दुनिया भर के इंसानों के लिए एक सार्वभौमिक खूबसूरती का पैमाना क्या हो और इसे पूरी दुनिया के स्तर पर संभव कैसे बनाया जाए? यह सोच और यह खोज इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि इंसान सदियों से सुंदर होने के उपाय खोजता रहा है। कभी प्राकृतिक नुस्खों से, कभी शल्य चिकित्सा से, कभी जीन एडिटिंग से, तो अब एआई आधारित तकनीकों से भी।

खूबसूरती की खोज की शुरुआत

19वीं सदी के अंत से ही वैज्ञानिक इंसान की स्थायी खूबसूरती का समाधान खोज रहे हैं। विशेषकर जब से शरीर रचना विज्ञान यानी एनाटॉमी और त्वचा विज्ञान यानी डर्मेटोलॉजी का व्यवस्थित विकास हुआ। तभी से विज्ञान कुछ बातों पर फोकस कर रहा है। जैसे-त्वचा की संरचना का विज्ञान क्या है और इसे हमेशा जवान कैसे बनाए रखा जा सकता है? आखिर उम्र बढ़ने की प्रक्रिया क्या है और इसे कैसे रोका जा सकता है? हार्मोन और सौंदर्य के बीच क्या संबंध हैं, क्या हार्मोन में ही इंसानी सौंदर्य का रहस्य छिपा है? 20वीं सदी के मध्य में प्लास्टिक सर्जरी के बाद कॉस्मेटिक सर्जरी लगभग चमत्कार की तरह उभरकर सामने आई। इस दौर में अनेक जैविक शोधों से यह स्पष्ट हुआ कि त्वचा का रंग, बालों की बनावट, चेहरे की आकृति और झुर्रियां इन सबका बड़ा हिस्सा जीन द्वारा नियंत्रित होता है। अतः जीन नियंत्रण का विज्ञान समझ लिया जाए तो एक तरह से खूबसूरती पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

सौंदर्य का केंद्र जेनेटिक्स

साल 2003 में ह्यूमन जीनोम प्रोजेक्ट लांच हुआ और यह विज्ञान के लिए मील का पत्थर साबित हुआ। इससे यह समझ में आया कि मानव शरीर में मौजूद हजारों जीन, हमारे शरीर की अलग-अलग संरचनाओं और गुणों के लिए जिम्मेदार हैं। इस शोध से पता चला त्वचा की मोटाई का कारण क्या है? कोलेजन का उत्पादन कैसे होता है? उम्र बढ़ने की गति क्या होती है? बाल झड़ते क्यों हैं? केंद्रीय रूप से इन सबके पीछे विशिष्ट कारण सिर्फ जीन हैं। आज वैज्ञानिक जीनों की पहचान करके एजिंग के रहस्य का पर्दाफाश करने में लगे हैं। इस शोध और लगातार कोशिश का निष्कर्ष यह है कि सैद्धांतिक रूप से जीन स्तर पर बदलाव करके उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को धीमा किया जा सकता है।

प्रभावी है कॉस्मेटिक टेक्नोलॉजी

हालांकि कॉस्मेटिक टेक्नोलॉजी अभी अस्थायी ही है। लेकिन निश्चित रूप से यह सौंदर्य विज्ञान का सबसे विकसित क्षेत्र है और एस्थेटिक मेडिसिन को भविष्य इंसान की खूबसूरती को स्थायी रूप देने में सक्षम माना जा रहा है। आज इसी विज्ञान के चलते-बोटोक्स, डर्मल फिलर्स, लेजर स्किन रिसर्फेसिंग तथा केमिकल पिल्स जैसी प्रक्रियाओं से लोग अपनी झुर्रियां कम कर रहे हैं। त्वचा को चिकनी, मुलायम और टाइट रख पाने में सफल हो रहे हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि चेहरे को पसंदीदा आकृति देने की कोशिश कर रहे हैं। हालांकि अभी यह 100 फीसदी संभव नहीं है, लेकिन हर गुजरते साल के साथ यह पहले से बेहतर होती जा रही है। इस बात का सबूत है कि बहुत जल्द इंसानी खूबसूरती का स्थायी समाधान बनकर कॉस्मेटिक टेक्नोलॉजी सामने आएगा।

जीन एडिटिंग में है भविष्य

साल 2012 के बाद जीन एडिटिंग तकनीक, जिसे सीआरआईएसपीआर-सीएएस-9 कहा जाता है, ने चिकित्सा जगत में क्रांति ला दी। इस तकनीक के जरिए वैज्ञानिक खराब जीन काट सकते हैं, नए जीन जोड़ सकते हैं, जीन के व्यवहार को नियंत्रित कर सकते हैं। ये सब सहूलियतें उम्मीद जता रही हैं कि भविष्य में इंसान गंभीर बीमारियों जैसे कैंसर, थैलेसीमिया और जेनेटिक डिसऑर्डर से पार पाने में सफल रहेगा। एजिंग के प्रभाव को धीमा किया जा सकता है, बालों के झड़ने को रोका जा सकता है, त्वचा को युवा बनाए रखने की स्थायी तरकीब ढूंढ़ी जा सकती है। लब्बोलुआब यह कि सिर्फ सुंदरता बढ़ाने के लिए नहीं बल्कि जीवन को गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए, जीन एडिटिंग की कवायद लगातार जारी है।

एआई और पर्सनलाइज्ड ब्यूटी

एआई आधारित सिस्टम के जरिए अब हम यह जान सकते हैं कि किसी व्यक्ति की त्वचा कितनी बूढ़ी है और वह किस रफ्तार से बूढ़ी हो रही है? वास्तव में इस सारी जानकारी को पर्सनलाइज्ड ब्यूटी प्लान के नाम से जानते हैं और इस प्लान के अस्तित्व में आने के बाद अब अलग-अलग इंसानों का स्वतंत्र रूप से खूबसूरत और स्वस्थ होना ज्यादा आसान और गारंटीड हुआ है। वैज्ञानिकों को भरोसा है कि अब खूबसूरती का स्थायी समाधान हासिल करने में बहुत देर नहीं है। *

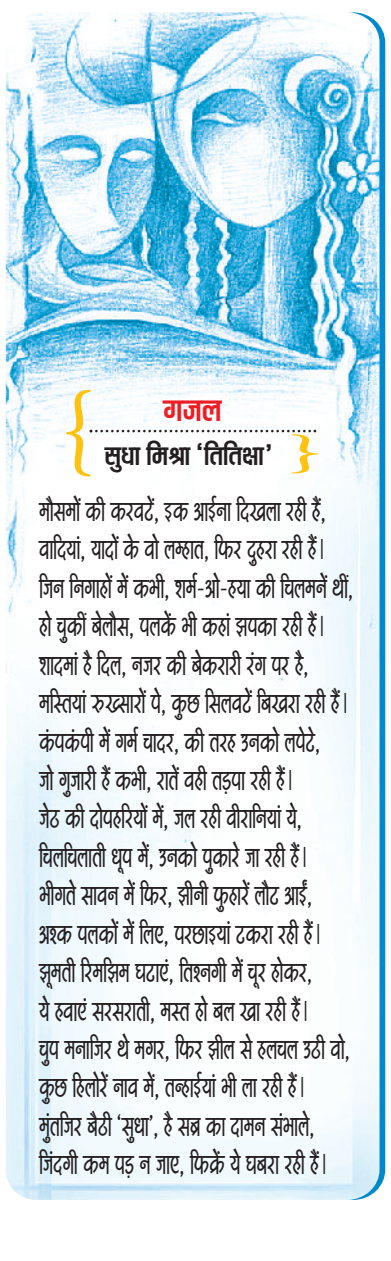

{ गजल / सुधा मिश्रा 'तितिक्षा' }

मौसमों की करवटें, इक आईना दिखला रही हैं,
वादियां, यादों के वो लम्हात, फिर दुहरा रही हैं।
जिन निगाहों में कभी, शर्म-ओ-हया की थिलमनें थीं,
हो चुकीं बेलौस, पलकें भी कहां झपका रही हैं।
शादमां है दिल, नजर की बेकरारी रंग पर है,
मस्तियां रुख्सारों पे, कुछ सिलवटें बिखरा रही हैं।
कंपकंपी में गर्म चादर, की तरह उनको लपेटे,
जो गुजारी हैं कभी, रातें वही तड़पा रही हैं।
जेठ की दोपहरियों में, जल रही वीरानियां ये,
चिलचिलाती धूप में, उनको पुकारे जा रही हैं।
भीगते सावन में फिर, ज़ीनी फुहारें लौट आईं,
अश्क पलकों में लिए, परछाइयां टकरा रही हैं।
झूमती रिमझिम घटाएं, तिश्नगी में चूर होकर,
ये ख्वाएं सरसराती, मस्त हो बल खा रही हैं।
चुप मनाजिर थे मगर, फिर झील से हलचल उठी वो,
कुछ हिलोरें नाव में, तन्हाईयां भी ला रही हैं।
मुंतजिर बैठी 'सुधा', है सब्र का दामन संभाले,
जिंदगी कम पड़ न जाए, फिक्रें ये घबरा रही हैं।

{ स्मरण / अरविंद कुमार }

सभी करते थे बाबू जी का सम्मान

हिंदी के प्रख्यात कथाकार अमरकांत जी का यह जन्मशती वर्ष है। उनकी कहानियों और उपन्यासों से तो अधिकांश साहित्यप्रेमी परिचित हैं ही, पर उनके व्यक्तित्व और स्वभाव में उपस्थित सदाशयता, विनम्रता के बारे में लोग कम ही जानते हैं। उनके सुपुत्र अरविंद कुमार ने अपने पिता से जुड़ी कुछ भावभीनी स्मृतियां **हरिभूमि** से साझा कीं। दुर्भाग्य से कुछ माह पूर्व अरविंद जी का निधन हो गया।

बाबू जी (अमरकांत जी) सपरिवार लखनऊ से जब करेलाबाग कॉलोनी (इलाहाबाद अब प्रयागराज) में आकर रहने लगे तो वहां एक अलग माहौल देखने को मिला। इस कॉलोनी में पांच सौ चार क्वार्टर्स हुआ करते थे, जिसमें हिंदू, मुसलमान, सिख और ईसाई सभी रहा करते। वहां बहुत ही सुखद सामाजिक रिश्तों का ताना-बाना, सौहार्दपूर्ण वातावरण देखने को मिला। हर तरफ हरियाली एवं सांस्कृतिक परिवेश का माहौल था। हमारे क्वार्टर के ठीक सामने एक बड़ा अमलतास का पेड़ था। गर्मियों में इसके फूल खिलते तो ऐसा महसूस होता था, जैसे पेड़ पीले गहनों से सजा हुआ है, एक बार नामवर सिंह जी दो-चार लोगों के साथ आए तो इस स्थान ने उन्हें अभिभूत कर दिया, वे बोले, 'अमरकांत जी हम लोग इसी मनोरम जगह पर बैठेंगे। सुबह का समय, यहां की अनुभूति कैसी होती है, महसूस किया जाए।' दरअसल, पेड़ों पर तरह-तरह के पक्षियों का आवागमन, उनका कलरव मोहक लगता। इसीलिए आने वाले लोगों को यह स्थान मनोरम लगता।

कॉलोनी के बाहर की एक सड़क (नूर उल्लाह रोड, जो स्टेशन से सीधी करेली गांव तक जाती) पर मिस्टर रफी अहमद नाम के व्यक्ति का प्रेस एवं पेपर कटिंग मशीन लगी थी। इस स्थान पर रोजाना दो खेल शतरंज एवं कैरम सायं सात बजे से रात्रि बारह बजे तक नियम से खेला जाता। रफी साहब का बाबू जी से बहुत अच्छा संबंध था। बाबू जी को भी उक्त दोनों खेल पसंद थे। शनिवार के दिन अकसर वहां उनका इंतजार रहता। बगल के मोहल्ला रसूलपुर से भी शतरंज और कैरम में रुचि रखने वाले कुछ लोग आते, जिसमें दो नाम खासतौर पर मुझे याद हैं एक बहार आलम, जो पेशे से वकील, साहित्य कला में भी दिलचस्पी रखते थे। और उनके छोटे भाई नन्हे पहलवान भी उनके साथ आया करते थे। एक रोज की बात है, मां ने मुझसे कहा, 'रात अधिक हो गई है। रफी अहमद के यहां जाकर देखो बाबू जी अभी आए क्यों नहीं?' मैं कुछ ही समय पश्चात वहां पहुंच गया। खेल में बड़ी खामोशी थी। शतरंज की अंतिम बाजी पर लोगों की निगाहें गड़ी हुई थीं। कई शोहरतमंद गणमान्य व्यक्तियों की मौजूदगी में खेल हो रहा था। उर्दू अनुवादक हुनर साहब, स्थानीय विधायक हबीब अहमद आपस में बाजी लगा बैठे थे। बाबू जी की दूसरी तरफ खिलाड़ी बहार आलम थे। पंद्रह मिनट का समय लगा, बाजी बाबू जी ने अपने पक्ष में कर ली। सभी बाबू जी को बधाई देने लगे। पर वे बहार आलम के खेल की सराहना करते जा रहे थे, 'बहुत अच्छा खेला आपने।' बाबूजी का स्वभाव ऐसा ही था, उनमें दंभ जरा भी नहीं था।

बाबूजी से जुड़ी एक और स्मृति याद आ रही है। अक्टूबर 1987 का दिन, वे गंभीर रूप से बीमार पड़े। वे मेटाबॉलिक बोन डिजीज से ग्रसित हो गए। उन्हें स्पाइनल कॉर्ड में इंफेक्शन हो गया था। प्रारंभ में कई डॉक्टरों से संपर्क किया गया, डॉक्टरों ने जॉगिंग और एक्सरसाइज करने की सलाह दी। उन्हें पेनकिलर के सहारे मुक्त कर दिया गया। समस्या यह हो गई कि उन्हें कोई भी खान-पान की चीज अच्छी नहीं लग रही थी और उनके बैक बोन में असहनीय दर्द था। मेडिकल कॉलेज के हड्डी के एक्सपर्ट डॉक्टरों ने कहा,'घबराने की बात नहीं है उम्र का तकाजा है।' जबकि ऐसी भी उम्र नहीं थी कि उस पर दोष मढ़ा जाए। बहरहाल, वे घर आ गए। मगर समस्या जस की तस बनी रही।

वे उन दिनों महिलाओं की पत्रिका 'मनोरमा' का संपादन कर रहे थे, किंतु स्वास्थ्य की वजह से असमर्थ हो गए थे। इसकी जानकारी डॉ. शांति चौधरी जी को हुई तो वे भागे-भागे घर पर आईं और पूरी जानकारी ली। उन्होंने अगले दिन इलाहाबाद मेडिकल कॉलेज में वीआईपी वार्ड बुक करवाया। सभी चेकअप हुए। जानकारी मिली कि बाबू जी का हीमोग्लोबिन चार प्रतिशत पर आ गया है, जोकि बहुत ही चिंताजनक था। नामी विशेषज्ञ डॉक्टर ने देखा। बाबू जी दो दिन अस्पताल में रहकर वापस घर आ गए। शांति चौधरी जी, बाबू जी को पिता तुल्य मानती थीं। हम लोगों का उनसे बहुत आत्मीय रिश्ता रहा है। वह 'मनोरमा' से विशेष कार्याधिकारी के रूप में जुड़ी थीं और इलाहाबाद मेडिकल कॉलेज में पीआरओ के पद पर थीं।

कुछ दिनों तक जब बाबू जी की सेहत में कोई सुधार नहीं हुआ तो चिंता हुई। तभी उन्हें देखने के लिए एस. के. दुबे आए जो टाइम्स ऑफ इंडिया के ब्यूरो चीफ थे। उन्होंने बताया डॉ. आर. सी. गुप्ता ऑस्ट्रेलिया से आ गए हैं, एक बार उन्हें बाबू जी को दिखाया जाएगा। उस समय रात्रि के आठ बजे हुए थे। लेकिन मुझे दूसरे दिन पर न टालकर रात्रि में ही ले जाना उचित लगा।

क्लीनिक बंद होने का समय रात्रि नौ बजे तक था। हम लोग पौने नौ बजे अस्पताल पहुंच गए। काउंटर बंद हो रहा था। डॉक्टर के असिस्टेंट डॉ. ए. के. सिंह ने बताया कि आप फीस जल्दी जमा कर दें, डॉ. साहब उठने वाले हैं। तभी डॉ. आर. सी. गुप्ता हम लोगों के समीप आए। उनकी पोशाक, पैर में खड़ाऊ और खद्दर का कुर्ता-पाजामा। पूछा, 'इन्हें क्या हो गया?' मैंने सभी बातें बताईं। उन्होंने असिस्टेंट डॉ. सिंह से कहा कि उस जगह का एक्स-रे करें जहां दर्द है। मैंने बताया प्रेस में जॉब करते हैं। फिर उनका सवाल था खड़े होकर काम करते हैं या बैठकर? मैंने कहा, 'बैठकर ही करते हैं।'

डॉक्टर गुप्ता ने पूछा, 'प्रेस कहां पर है?' जब मैंने प्रेस का नाम बताया, तो बोले, 'अरे यह प्रेस तो बहुत बड़ा है। यहां से तो पांच-छह मशहूर पत्रिकाएं निकलती हैं माया, मनोरमा, सत्यकथा, मनोहर कहानियां, प्रोब इंडिया। मनोरमा के संपादक तुम्हारे पिता के नाम वाले ही हैं, उनका नाम अमरकांत है, मगर वह बड़े राइटर हैं।'

मैंने जब उनसे कहा कि वे यही हैं। इस पर पहले तो डॉक्टर साहब मुझे कुछ सेकेंड एकटक देखते रहे फिर उठकर एक्स-रे रूम में गए। कुछ सेकेंड में डॉक्टर ए. के. सिंह जी बाहर आए और रसीद काउंटर रूम में गए। मेरे जमा किए गए पैसे लाकर विनम्रतापूर्वक मुझे दे दिए। बोले, 'डॉक्टर साहब ने पैसे वापस करने के लिए कहा है।' डॉक्टर आर. सी. गुप्ता पंद्रह-बीस मिनट में अपने चैंबर में वापस आ गए, बोले, 'जो मुझे शक था वही निकला।' उन्होंने अपने क्लीनिक से पूरे एक माह की दवा मुझे दी। मैं पैसे निकालने लगा, तो मना कर दिया, फिर बोले 'इनका पूरा इलाज मैं करूंगा। आपको कोई तनाव नहीं लेना है। मैं आपके साथ हूं। मुझे अमरकांत जी की सेवा करने का मौका मिला, मेरा सौभाग्य है। मैं कमिश्नर, मंत्री के घर नहीं जाता हूं, लेकिन मैं आपके घर नियमित आकर इनको देखूंगा। अस्पताल आने की जरूरत नहीं है, घर पर ही सभी इंतजाम करवा दूंगा।' उन्होंने सच में ऐसा ही किया। घर पर ही बाबू जी को ट्रैक्शन लगवाया, साथ ही कमर से लेकर छाती तक प्लास्टर भी करवाया। छह माह तक वे बाबू जी को देखने घर नियमित आते रहे, न कभी फीस लिया और दवा, इंजेक्शन के खर्च से भी मुक्त रखा। बाबू जी छह माह ट्रैक्शन, प्लास्टर और दवा पर रहे, सीधे लेटे रहते। मर्ज जरूर दूर हो गया किंतु स्पाइनल कॉर्ड डिफार्म हो गया। बाबू जी को कष्ट तो बहुत रहा लेकिन डॉक्टर आर. सी. गुप्ता जैसे लोगों का उनके प्रति आदर और प्रेम देखकर मैं अभिभूत हो जाता था। बाबू जी इतने बड़े लेखक-संपादक थे लेकिन उनका व्यक्तित्व इतना सरल रहता कि हर कोई उनका सम्मान करता था। *

सैर-सपाटा
अंशु सिंह

भारत के उत्तरपूर्व में छोटा सा प्रदेश है- सिक्किम। इसका एक तिहाई हिस्सा बायोस्फीयर रिजर्व और यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज साइट है, जहां दुनिया की तीसरी सबसे ऊंची चोटी, माउंट कंचनजंगा स्थित है। यहां की संस्कृति मिली-जुली है। खाना अनोखा है, नजारे शानदार, सड़कें साफ-सुथरी और माहौल बहुत शांत है। कुछ समय पूर्व ही सिक्किम की यात्रा से लौटीं लेखिका इसकी खूबसूरती बयां कर रही हैं अपनी जुबानी।

जन्नत से कम नहीं सिक्किम

हालांकि देश के अलग-अलग हिस्से में यात्राएं तो मैंने कई की हैं। लेकिन अब तक देश के उत्तरी पूर्वी राज्यों में से कहीं जाना नहीं हुआ था। इसलिए जिस दिन सिक्किम यात्रा का प्लान फाइनल हुआ, उस दिन से मन में एक अलग-सा उल्लास भर गया था। दिल्ली से सिक्किम जाने के दो विकल्प थे- ट्रेन या हवाई जहाज। हमारे समूह ने ट्रेन से जाने का निर्णय लिया। दिल्ली से पहले पश्चिम बंगाल के नई जलपाईगुड़ी और फिर वहां से प्राइवेट कैब लेकर गंगटोक। यह यात्रा काफी दिलचस्प रही। पहाड़, जंगल, संग-संग बहती तीस्ता नदी और छोटे-छोटे गांव, कस्बों को पार करते हुए आखिरकार हम गंगटोक पहुंचे।

गंगटोक ने मोह लिया मन

हिमालय की गोद में बसा गंगटोक एक ऐसा स्थान है, जहां बादल पहाड़ों के साथ अठखेलियां करते हैं, तो नदियां अपनी ही धुन में गीत गाती बहती हैं। यह नजारा किसी जन्नत से कम नहीं लगता। जैसे ही सूरज की किरणें बर्फ से ढंकी चोटियों को चूमती हैं, नीचे हरी-भरी घाटियों पर सुनहरी आभा बिखर जाती है। अपने रंग-बिरंगे बौद्ध मठों, बाजारों और मोहक नजारों से सजा गंगटोक बेमिसाल है। सिक्किम की यह राजधानी दुनिया के कुछ सबसे शानदार बौद्ध मठों का घर है, जिसमें सबसे मशहूर मठ है रुमटेक मठ। गंगटोक से करीब 21 किमी दूर स्थित इस मठ के शांत माहौल में आप रम जाएंगे। इसके अलावा, बीच शहर में स्थित गोनजैंग मठ भी कम मनमोहक नहीं है। शहर के अन्य आकर्षणों में बानझाकरी वॉटरफॉल, ताशी व्यू प्वाइंट, गणेश टोक, हनुमान टोक, गैंगटोक रोप-वे राइड, हिमालयन जूलॉजिकल पार्क और ऑर्किडेरियम मुख्य हैं।

टेमी टी गार्डन से कंचनगंजा के दीदार

गंगटोक पहुंचने के दूसरे दिन, सुबह नाश्ता करके हम सभी पश्चिम सिक्किम के पेल्लिंग के लिए रवाना हुए, जो करीब 130 किमी. दूर था। हमारा पहला पड़ाव टेमी चाय बागान था। यह सिक्किम का एकमात्र टी गार्डन है, जहां ऑर्गेनिक चाय की पैदावार होती है। घुमावदार रास्तों से जब हमने इस गार्डन में प्रवेश किया, तो वहां की खूबसूरत छटा देखते ही रह गए। मौसम साफ था, तो वहां से कंचनजंगा चोटी के दीदार भी हुए। कुछ समय बिताने के पश्चात हम आगे बढ़े। शाम करीब 4.15 बजे हम पेल्लिंग स्थित अपने होम स्टे पर पहुंच गए। वहां सभी का स्थानीय रीति-रिवाज के अनुसार, स्वागत हुआ। लेकिन तब तक मौसम का रंग बदल चुका था। रिमझिम शुरू हो गई। अगली सुबह भी बारिश थमी नहीं। लेकिन नौ बजते-बजते आसमान साफ होने लगा। हम निकल पड़े पेल्लिंग की ओर।

पश्चिमी सिक्किम का नगीना-पेल्लिंग

पेल्लिंग एक शांत कस्बा है, जो करीब 7,050 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। यह प्रकृति प्रेमियों के लिए किसी स्वर्ग सरीखा है। हरी-भरी घाटियों, झर-झर गिरते झरनों और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के साथ यह इलाका सिक्किम के मूल स्वरूप को बेहद खूबसूरती से समेटे हुए है। यहां अकसर कोहरा और बादल छाए रहते हैं, जो इसकी अलौकिक सुंदरता को और भी बढ़ा देते हैं। यहां ट्रैकिंग, माउंटेन बाइकिंग, बर्ड वॉचिंग करने के अलावा, प्राचीन मठ, गोंपा और स्तूपों से लेकर यूनेस्को द्वारा घोषित विश्व धरोहर कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान एवं पवित्र खेचेओपालरी झील की सैर कर सकते हैं। हमने कुछ चुनिंदा स्थानों पर जाना तय किया।

पेमायंगत्से मठः 17वीं सदी में स्थापित, सिक्किम के सबसे पुराने मठों में से एक पेमायंगत्से मठ में दुर्लभ कलाकृतियां देखने को मिलेंगे।

खेचेओपालरी झीलः बौद्ध और हिंदू धर्म में पूज्यनीय माने जाने वाले पवित्र खेचेओपालरी झील में एक अलग ही अनुभव होता है। मान्यता है कि मनोकामना पूर्ति करने वाली इस झील के शांत जल को गुरु पद्मसिन और देवी तारा का आशीर्वाद प्राप्त है।

सिडकियोंग बर्ड पार्कः पक्षी प्रेमियों के लिए पेल्लिंग और रबदंत्से के बीच एक खास आकर्षण का स्थल है- सिडकियोंग बर्ड पार्क, जो हिमालयी क्षेत्र में पाए जाने वाले देशी-विदेशी पक्षियों का घर है।

रिवर ऑरेंज गार्डनः रिंबी नदी के किनारे स्थित इस गार्डन में संतरे के बेशुमार पेड़ लगे हैं। ऑरेंज गार्डन के अंदर एक विलेज होमस्टे, कुछ दुकानें और रेस्टोरेंट भी हैं।

ग्लास स्काईवॉकः ग्लास स्काईवॉक पेल्लिंग के बेहद शानदार अनुभवों में से एक है। देश के इस पहले 'ग्लास स्काईवॉक' के अनुभव को भुलाया नहीं जा सकता, जो समुद्रतल से लगभग 7200 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। जब आप इसके पारदर्शी शीशे के फर्श पर कदम रखते हैं, तो हवा में चलने जैसा एहसास होता है। नीचे घाटी को देखते हुए रोमांचक अनुभव होने के साथ-साथ थोड़ी घबराहट भी होती है। लेकिन आस-पास के हरे-भरे नजारे और पूर्वी हिमालय के शानदार दृश्य मन को सुकून देते हैं। स्काईवॉक के समीप ही चार भुजाओं वाले चेनरेजिंग (अवलोकितेश्वर) की 137 फीट ऊंची मूर्ति भी स्थित है।

नामची में चार धाम के दिव्य दर्शन

पेल्लिंग में दो दिन बिताने के उपरांत हमारा अगला डेस्टिनेशन था, सिक्किम के दक्षिण में स्थित नामची। इसे राज्य का सांस्कृतिक और धार्मिक केंद्र कहते हैं। यहां हमने 'चार धाम' मंदिर के दर्शन किए। असल में यहां भारत के चार पवित्र मंदिरों- बद्रीनाथ, जगन्नाथ, द्वारका और रामेश्वरम की प्रतिकृतियां बनाई गई हैं। मंदिर परिसर में भगवान शिव की 108 फुट ऊंची प्रतिमा मुख्य आकर्षण का केंद्र है। समीप में एक भव्य साईं मंदिर भी है।

रावंगला का अलौकिक बुद्ध पार्क

नामची से जब हम रावंगला की ओर बढ़े, तो वहां हमें एक भव्य बुद्ध पार्क के दर्शन हुए, जिसे 'तथागत त्सल' के नाम से भी जाना जाता है। यहां शाक्यमुनि बुद्ध की 130 फुट ऊंची, अत्यंत सुंदर प्रतिमा स्थित है।

मनमोहक त्सोंगो झील

गंगटोक से लगभग 40 किलोमीटर दूर (गंगटोक-नाथुला हाइवे), 12,313 फीट की ऊंचाई पर स्थित त्सोंगो झील एक हिमनद झील है, जो अपने शानदार प्राकृतिक नजारों और गहरे सांस्कृतिक महत्व के लिए जानी जाती है। इसकी सतह

का रंग मौसम के अनुसार, बदलता रहता है। जैसे ही हम इसके करीब पहुंचे, वहां का नजारा कल्पना से भी परे था। चारों ओर बर्फ से ढंकी चोटियां और हरे-भरे घास के मैदान। यह किसी परी कथा से सीधे निकला हुआ दृश्य लग रहा था। हमने यहां न सिर्फ बर्फ में मस्ती, याक की सवारी की, बल्कि दुनिया के सबसे ऊंचे रोप-वे की रोमांचक यात्रा भी की।

लाचुंग की यादगार यात्रा

हमारा अगला पड़ाव अब सिक्किम का उत्तरी भाग था, जो क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा और अधिक रिमोट क्षेत्र है। गंगटोक से लाचुंग की दूरी करीब 102 किमी. है। सबसे पहले हमें मिला, सेवन सिस्टर्स वॉटरफॉल्स। इस झरने में सात सीढ़ियां या चरण हैं, इसलिए इसका यह नाम पड़ा। यहां कुछ देर ठहरने के पश्चात हम आगे बढ़े, तो अगला पड़ाव लाचुंग में प्रवेश का चेक प्वाइंट था। लाचुंग में हमने रात में होटल में विश्राम किया और अगले दिन सुबह-सुबह युमथांग घाटी और जीरो प्वाइंट के लिए निकले।

परीलोक जैसा युमथांग घाटी

11,800 फीट से ज्यादा की ऊंचाई पर बसा युमथांग घाटी किसी परीलोक जैसा लगा। अल्पाइन घास के सुंदर मैदान, चारों ओर बर्फ से ढंकी चोटियां, गर्म पानी के झरने और साथ में बहती लाचुंग नदी। इसे फूलों की घाटी भी कहते हैं। यहां खासकर रोडोडेंड्रोन के फूल खिलते हैं, जो वैली को गुलाबी, लाल और बैंगनी रंगों से रंग देते हैं।

धरती का वंडरलैंड जीरो प्वाइंट

युमथांग घाटी के सर्पीले रास्तों से गुजरते हुए हमारा साक्षात्कार धरती पर एक अलग ही दुनिया से होता है, जिसे 'जीरो प्वाइंट' (या युमेसमडोंग) कहते हैं। उत्तरी सिक्किम में 15,300 फीट की ऊंचाई पर भारत-चीन सीमा के पास स्थित यह एक सफेद वंडरलैंड है। यहां ऑक्सीजन की मात्रा कम होती है, तो आपको नीचे से ही पोर्टेबल ऑक्सीजन कैन लेकर आना होता है। जीरो प्वाइंट पर सिर्फ भारतीय सैलानी ही आ सकते हैं। उन्हें सिक्किम टूरिज्म डिपार्टमेंट से प्रोटेक्टेड एरिया परमिट की जरूरत पड़ती है, जो रजिस्टर्ड टूर ऑपरेटर के जरिए एडवांस में लेना होता है। *

कब जाएं : सिक्किम जाने का बेस्ट टाइम है मार्च से मई का महीना। इसके अलावा अक्टूबर से दिसंबर के मध्य तक यहां जा सकते हैं। यूं कहें कि मानसून से पहले यहां कभी भी जा सकते हैं।

कैसे जाएं : आमतौर पर सैलानी पश्चिम बंगाल के बागडोगरा तक हवाई यात्रा करते हैं और वहां से कैब के जरिए गंगटोक जाते हैं। आगे की यात्रा भी सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त टूर ऑपरेटर के कैब या टैक्सी से करते हैं। बागडोगरा के अलावा, गंगटोक से 35 किमी दूर स्पेशल पाकयोंग एयरपोर्ट भी है। ट्रेन से आप सिलिगुड़ी या न्यू जलपाईगुड़ी तक पहुंच सकते हैं और वहां से कैब से गंगटोक जा सकते हैं।

परफ्यूम-डिओड्रेंट से मिले फ्रेश फील

सीजनल ट्रेंड / विवेक कुमार

गर्मी के मौसम में युवाओं की लाइफस्टाइल में कई तरह के बदलाव देखने को मिलते हैं। उनके ड्रेस कलर हल्के हो जाते हैं। फुटवियर कंफर्टेबल और पसीना सोखने वाले पहनने लगते हैं। स्किन केयर प्रोडक्ट्स की संख्या बढ़ जाती है और इन सब चीजों के साथ ही शामिल हो जाता है डिओड्रेंट और परफ्यूम।

बढ़ा है ट्रेंडः एक जमाना था, जब केवल खास मौकों पर ही परफ्यूम, डिओड्रेंट आदि का इस्तेमाल किया जाता था। लेकिन आज के युवाओं की डेली लाइफस्टाइल के लिए ये जरूरी चीजें बन गई हैं, क्योंकि अब खुशबू केवल सौंदर्य का विषय नहीं बल्कि आत्मविश्वास और व्यक्तित्व का भी हिस्सा है। इसलिए कॉलेज से लेकर सोशल गेदरिंग और दफ्तर तक में परफ्यूम, डिओड्रेंट का चलन बहुत बढ़ गया है।

गर्मियों में इसलिए भी है जरूरीः गर्मियों में शरीर से पसीना बहुत निकलता है। इस कारण शरीर में बैक्टीरिया तेजी से सक्रिय होते हैं और शरीर से दुर्गंध आने लगती है। यंगस्टर्स सबसे ज्यादा भागदौड़ करते हैं और बहुत सारे लोगों से मिलते-जुलते हैं। ऐसे में शरीर से अच्छी खुशबू आना और फ्रेश फील करना, जरूरी हो जाता है। यही वजह है कि गर्मी के मौसम में डिओड्रेंट और परफ्यूम युवाओं के लिए सबसे जरूरी एसेसरीज बन जाती हैं।

बदल रही है च्वॉइसः फ्रेगरेंस की बात करें तो पहले के जमाने में लोग सिट्रस, एक्वा, मिंट, फ्लोरल नोट्स वाले परफ्यूम इस्तेमाल किया करते थे। जबकि लड़कियां बॉडी मिस्ट और हल्के फ्रूटी परफ्यूम पसंद करती थीं। लेकिन आजकल

स्पोर्टी और मस्क फ्रेगरेंस का चलन बढ़ा है।

बढ़ी है डिमांड-सप्लाईः कुछ दशक पहले के युवाओं के मुकाबले आज के युवाओं की अर्निंग और परचेजिंग पावर बढ़ी है। जो टीनएजर अपने मम्मी-पापा पर पॉकेटमनी के लिए डिपेंड हैं, उनकी पॉकेटमनी भी पहले से काफी ज्यादा बढ़ गई है। इस कारण भी बाजार में परफ्यूम और डिओड्रेंट जैसी एसेसरीज की भरमार हो गई है। अब केवल बड़े ब्रांड ही नहीं बल्कि कई भारतीय स्टार्टअप भी युवाओं को ध्यान में रखकर नए-नए प्रोडक्ट्स लांच कर रहे हैं। मसलन, पॉकेट परफ्यूम, मिनी रोल-ऑन, एल्कोहल फ्री डिओड्रेंट आदि तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। *

सिने ट्रेंड
डी. जे. नंदन

फिल्मों में कितना इफेक्टिव है स्पीड-एडवेंचर का जादू

आज की दौड़ती-भागती जिंदगी जी रहे लोग, खासकर यंगस्टर्स, मनोरंजन के लिए देखी जाने वाली फिल्मों में भी 'स्पीड' यानी तेजी से भागती कहानी पसंद करते हैं। हालांकि कई फिल्में इसकी अपवाद भी रही हैं। फिल्मों में स्पीड और एडवेंचर के सक्सेस से रिलेशन पर एक नजर।

आज का दर्शक ठहराव नहीं, स्पीड चाहता है।' यह धारणा इन दिनों फिल्म जगत में किसी सूत्रवाक्य की तरह हर तरफ गूंज रही है। कहा जा रहा है कि मोबाइल स्क्रीन, रील कल्चर और लगातार बदलती डिजिटल दुनिया ने युवाओं को इतना धैर्यहीन बना दिया है कि अब वह उन्हीं फिल्मों को देख सकते हैं या देखते हैं, जो शुरुआती 10 मिनटों में ही दर्शकों को खुद से जोड़ ले। हर कुछ देर में चौकाएं और कहानी में बिना कोई ठहराव आए, वह लगातार आगे बढ़ती रहे। इसके लिए फिल्मों में तेज एडिटिंग, छोटे दृश्य, लगातार ट्विस्ट और ऊंची भावनात्मक उत्तेजना का चलन बढ़ा है। कुल मिलाकर यह 'हाई इंगेजिंग' ड्रामा का दौर है।

दर्शकों को चाहिए अटैचमेंट हुकः इसमें कोई दो राय नहीं है कि आज का युवा दर्शक शुरू से ही फिल्मों में 'अटैचमेंट हुक' चाहता है। उसमें यह आदत हाल के सालों में विकसित हुई रील कल्चर और विभिन्न डिजिटल प्लेटफॉर्म ने ही लगाई है, क्योंकि आज के युवा आमतौर पर दिन के तीन से चार घंटे, छोटे वीडियो और तेज रफ्तार सूचनाओं के घेरे में रहते हैं। लगातार बदलती विजुअल एक्साइटमेंट के बीच रहने के कारण उनके स्वभाव में तेजी को लेकर पसंदगी बढ़ी है। बॉलीवुड फिल्म इंडस्ट्री में भी कुछ इस तरह से हाइप बन गई है कि अगर कहानी देर तक एक ही वातावरण में टिकी रही तो दर्शकों, विशेषकर युवाओं का ध्यान उचट जाएगा और वो फिल्म को नकारा देंगे।

इन फिल्मों ने सेट किया नया ट्रेंडः अब बॉलीवुड ट्रेंड के जानकारों और फिल्म मेकर्स के लिए सफलता का अलिखित सिद्धांत बन चुका है कि युवा दर्शकों को फिल्मों में शुरू से ही बांधकर रखो। किसी बड़े हादसे के जरिए, किसी उलझाऊ रहस्य के जरिए या अंधाधुंध हिंसा अथवा विस्फोट के जरिए। बहरहाल, यह राय बनाने या यूं कहें कि यह ट्रेंड सेट करने में हाल के वर्षों में आई 'जवान' और 'एनिमल' जैसी फिल्मों की बड़ी भूमिका है। क्योंकि इन फिल्मों में तेज रफ्तारी का सिद्धांत ही सबसे ज्यादा मजबूती से खड़ा दिखाई देता है। इन फिल्मों की सफलता और फिर हाल में आई 'धुरंधर-1', 'धुरंधर-2', की सफलता ने ही तेज रफ्तार वाली फिल्मों के लिए माहौल बनाया है। ट्विस्ट और टर्न्स से भरी इन इन सभी फिल्मों में बड़ी तेजी से थोड़ी-थोड़ी देर में दृश्य बदलते हैं।

इमोशनल इंगेजिंग फिल्में भी हुईं सफलः फिल्मों की स्पीड को लेकर सवाल यह भी उठता है कि क्या सचमुच आज का युवा दर्शक सिर्फ तेज रफ्तार फिल्मों का दीवाना है? अगर ऐसा ही होता तो भला '12वीं फेल' और 'लापता लेडीज' जैसी धीमी रफ्तार वाली फिल्मों को युवाओं ने इतना क्यों पसंद किया? दरअसल, बहस सिर्फ स्पीड की नहीं इंगेजमेंट की है। आज का युवा दर्शक वाकई कहानी में अनावश्यक खिंचाव नहीं चाहता, लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं है कि वह भावनात्मक गहराई को समझता नहीं या उसे पसंद नहीं करता। जब भी ऐसी फिल्में आती हैं, जिनमें भावनात्मक गहराई मौजूद होती है, तो फिर वह उन्हें निश्चित रूप से पसंद करता है। '12वीं फेल' और 'लापता लेडीज' जैसी फिल्मों का कथानक भी महानगरों से दूर ग्रामीण परिवेश का था, फिर भी ये दोनों फिल्में खासकर युवा दर्शकों द्वारा खूब पसंद की गईं, तो इसका मतलब यह है कि युवा दर्शक सिर्फ तेज स्पीड और हाई इंगेजिंग फिल्मों को ही पसंद नहीं करते बल्कि उन सभी फिल्मों को पसंद करता है, जो उनकी भावनाओं को स्पर्श करती हैं। आज के युवा दर्शक अच्छी कहानी पसंद करते हैं, चाहे वह तेज हो या फिर चाहे धीमी ही क्यों न हो।

पुरानी फिल्मों में नहीं था स्पीड का प्रेशरः पुराने जमाने की फिल्मों के पात्र आपस में देर तक बातचीत करते थे। खामोशी होती थी, तो वह भी कई बार इतनी लंबी होती थी कि दर्शक खुद खामोशी महसूस करने लगता था। इस तरह अगर इस स्पीड के पैमाने पर पुरानी फिल्मों को कसें तो कोई फिल्म ही नहीं हिट होनी चाहिए थी। लेकिन हम जानते हैं कि फिल्मों की सफलता की दर आज के मुकाबले पहले कहीं ज्यादा थी। यह अलग बात है कि आज के मुकाबले फिल्मों की कमाई बहुत कम थी। वास्तव में पेस (स्पीड) इन दिनों सच्चाई से कहीं ज्यादा एक फैशन की तरह इस्तेमाल किया जा रहा है, जबकि सच यह है कि आज के दर्शक भी गहरे और इंटेंस कम रफ्तार के दृश्य भी खूब पसंद करते हैं।

स्पीड के अलावा भी हैं कई फैक्टर्सः आज का युवा दर्शक सिर्फ धीमेपन से बोर नहीं होता बल्कि बेसिर पैर के फिल्म के खिंचाव, बिना किसी वजह फिल्म को वल्गर बनाने की कोशिश और जबर्दस्ती फिल्मों में ठूंस दिए गए आइटम सॉन्ग जैसे एक्सपेरिमेंट्स से चिढ़ता है। उसे ऐसी फिल्में वाकई ज्यादा पसंद नहीं आतीं, जिनमें जानबूझकर लॉजिक की ऐसी-तैसी की गई हो। आज का दर्शक फिल्म के हर फ्रेम में चाहे वह जिस तरह की भावना का हो, इसमें हाई इंटेंसिटी की तलाश करता है। कुल मिलाकर कहने का मतलब यह है कि सवाल रफ्तार का नहीं, निरंतरता का है। अगर फिल्में दर्शक को लगातार मानसिक और भावनात्मक तरीके से जोड़े रखती हैं, तो वह धीमी होकर भी प्रभावशाली हो सकती हैं, यह कोई ब्रह्म वाक्य नहीं है कि आज का दर्शक स्पीड और हाई इंगेजिंग ट्विस्ट वाली फिल्में ही देखना चाहते हैं। वे केवल एंटरटेनमेंट चाहते हैं। *

रोचक
शिखर चंद जैन

इन दिनों फ्रूट मार्केट में तरह-तरह के आम खूब मिल रहे हैं। इनका स्वाद तो लाजवाब होता ही है, इनसे जुड़े अतीत के कुछ किस्से भी बड़े दिलचस्प हैं।

आम से जुड़े ये किस्से हैं बेहद खास

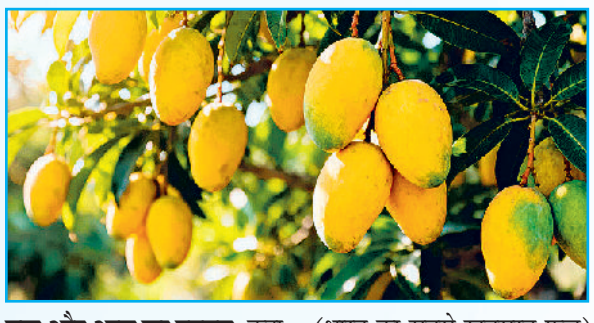

भारत में आम केवल एक फल नहीं, बल्कि संस्कृति, साहित्य इतिहास और राजनीति का एक अहम हिस्सा रहा है। सम्राटों से लेकर राजनेताओं और साहित्यकारों तक, आम की मिठास ने कई किस्सों को जन्म दिया है। हिंदी साहित्य में 'आम' न केवल फलों का राजा होने के कारण प्रसिद्ध है, बल्कि यह वसंत ऋतु, प्रेम, मादकता और कामदेव के प्रतीकों के रूप में भी बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्राचीन संस्कृत साहित्य से लेकर आधुनिक हिंदी कविता और निबंधों तक, आम का बौर, उसकी खुशबू और मिठास कवियों और लेखकों की कल्पना का अभिन्न हिस्सा रही है। आम से जुड़े कुछ रोचक किस्से हैं, जो आज भी रस ले-लेकर सुने-सुनाए जाते हैं।

आम्रपाली और आम्रपाली आम का रिश्ताः बिहार की प्रसिद्ध नृत्यांगना और वैशाली की गणिका आम्रपाली, आम के पेड़ के नीचे शिशु रूप में मिली थी, इसलिए उसका नाम 'आम्रपाली' (आम के पत्ते) रखा गया। आम की एक लोकप्रिय किस्म 'आम्रपाली' का नामकरण उसी के नाम पर किया गया है।

बुद्ध और आम का उपवनः कहा जाता है कि आम्रपाली ने भगवान बुद्ध को अपने आम के बाग (आम्रवन) में आमंत्रित किया था और उन्हें वह बाग दान कर दिया था। आम्रपाली बाद में महात्मा बुद्ध की शिष्या बन गईं।

अमीर खुसरो का आम पर शेरः 13वीं सदी के महान कवि अमीर खुसरो ने फारसी में आम की प्रशंसा में कविताएं लिखी थीं। खुसरो ने आम को 'नगजा तरीन मेवाह हिंद' (भारत का सबसे खूबसूरत फल) कहा था।

अलाउद्दीन खिलजी की शाही दावत में आमः दिल्ली के सुल्तान रहे अलाउद्दीन खिलजी आम के दीवाने थे। कहा जाता है कि उन्होंने दिल्ली के 'कुश-ए-फिरोजी' में आम की कई किस्मों की एक शानदार दावत दी थी, जिसमें उन्होंने आम के साथ संगीत का शानदार कार्यक्रम आयोजित करवाया था।

आम का दीवाना बाबरः मुगल वंश के संस्थापक बाबर को आम इतना पसंद था कि उसने अपनी आत्मकथा 'तुजुक-ए-बाबरी' में आम का जिक्र किया है। कहा जाता है कि वह भारत में आम का स्वाद चखकर चकित रह गया था, क्योंकि यह फल मध्य एशिया के देशों में नहीं मिलता था।

अकबर का आम प्रेम और लाख बागः मुगल बादशाह अकबर आम का इतना शौकीन था कि उसने बिहार के दरभंगा में 1 लाख से अधिक आम के पेड़ों का बाग लगवाया था, जिसे 'लाखी बाग' कहा जाता था। उसने आम की कई उन्नत किस्मों को भी विकसित करने में सहायता दी थी।

मिर्जा गालिब की आम-दीवानगीः मशहूर शायर मिर्जा गालिब आम के बड़े दीवाने थे। वे कहते थे कि 'आम में बस दो ही खूबियां होनी चाहिए-वे मीठे हों और बहुत सारे हों।' एक किस्से के अनुसार, जब उनके दोस्त ने आम को नापसंद किया, तो गालिब ने नाराज होकर कहा था, 'गधे भी आम नहीं खाते।' *

भारत में हुई आम की उत्पत्तिः माना जाता है कि आम की उत्पत्ति दक्षिण-पूर्व एशिया और भारत में हुई, जहां 4000 वर्ष ईसा पूर्व हिंदू ग्रंथों में इस फल का उल्लेख मिलता है। बौद्ध भिक्षु भी इस फल की खेती करते थे। प्राचीन काल में बौद्ध भिक्षुओं और बाद में व्यापारियों तथा विदेशी यात्रियों के माध्यम से आम दक्षिण-पूर्व एशिया, मध्य पूर्व, अफ्रीका और अंततः दक्षिण अमेरिका तक पहुंचा।